कृष्ण पक्ष, 22 वर्ष, अंक 351, पृष्ठ 08 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शुक्रवार 19 जनवरी 2024 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

मराठाओं को मूर्ख बना रही सरकार: मनोज जरांगे

मुंबई

महाराष्ट्र में मनोज जरांगे के नेतृत्व में मराठा आरक्षण आंदोलन जारी है। इस बीच, छत्रपति संभाजीनगर में जरांगे ने शुक्रवार को आरोप लगाया कि राज्य सरकार मराठाओं को मूर्ख बनाने का प्रयास कर रही है और उनका समुदाय किसी जाल में नहीं फंसेगा। उन्होंने यह भी कहा, सरकार को आरक्षण के मुद्दे पर अब तक कोई रास्ता नहीं मिला है। इसलिए, वह और उनके समुदाय के लोग पहले से तय फैसले के अनुसार बीस जनवरी को मुंबई के लिए मार्च करेंगे।

आरक्षण कार्यकर्ता ने इस बात को दोहराया कि सरकार को 54 लाख मराठाओं को तुरंत कुनबी प्रमाण पत्र जारी करना चाहिए। उन्होंने कहा, सरकार हर आंदोलन से दो-तीन दिन पहले हमारे पास आती है। वे मराठा समुदाय को फंसाने और मूर्ख बनाने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन, मराठा किसी जाल में नहीं फंसेंगे। हम पहले से तय किए गए फैसले के मुताबिक बीस जनवरी को मुंबई कूच करेंगे। सरकार को अब तक कोई रास्ता नहीं मिला है।उन्होंने आगे कहा, हम अपने आरक्षण की मांग को लेकर मराठा लोगों के साथ मुंबई जाएंगे। जरांगे ने यह भी आरोप लगाया कि सरकार और कुछ मंत्री मराठा आंदोलन के खिलाफ साजिश रच रहे हैं।

'सीएम पिनाराई विजयन की बेटी के स्वामित्व वाली कंपनी की जांच हो'

तिरुवनंतपुरम

केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन की बेटी टी वीणा की स्वामित्व वाली कंपनी के खिलाफ आरोपों ने राज्य की राजनीति को गरमा दिया है। विपक्षी कांग्रेस ने गुरुवार को अवैध लेनदेन के बारे में नए आरोपों की केंद्रीय एजेंसी से जांच कराने की मांग की है। विपक्ष के नेता वीडी सतीसन ने सीएम की बेटी की बंद हो चुकी आईटी कंपनी से जुड़े आरोपों की सीबीआई या ईडी से जांच कराने की मांग की है। कंपनी रजिस्ट्रार(आरओसी) द्वारा कंपनी के खिलाफ रिपोर्ट किए गए निष्कर्षों के मद्देनजर आया है।

'कोई भी योजनाओं के लाभ से नहीं छूटेगा'

मोदी ऐसे लोगों को पूजता और पूछता है, जिनको किसी ने नहीं पूछा: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

नई दिल्ली

विकसित भारत संकल्प यात्रा के रथ को विश्वास रथ बताते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक बार फिर दोहराया कि कोई भी वंचित नहीं रहेगा। कोई भी योजनाओं के लाभ से नहीं छूटेगा। उन्होंने कहा कि इस यात्रा का सबसे प्रमुख ध्येय ऐसे लोगों तक पहुंचना था, जो किसी न किसी वजह से अब तक सरकार की योजनाओं से वंचित रहे। मोदी ऐसे लोगों को पूजता, ऐसे लोगों को पूछता है, जिनको किसी ने नहीं पूछा। उन्होंने दावा किया कि कोई अध्ययन करे तो पाएगा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा जैसा अभियान लास्ट माइल डिलीवरी का सबसे बेहतरीन माध्यम है।

दो माह में यात्रा बनी जन आंदोलन: पीएम मोदी

विकसित भारत संकल्प यात्रा के लाभार्थियों से दसवीं बार वर्चुअल संवाद में बुधवार को प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि जब 15 नवंबर को भगवान बिरसा मुंडा के आशीर्वाद से यह यात्रा शुरू की थी तो इसकी इतनी सफलता की कल्पना नहीं की थी। सिर्फ दो महीने में यह यात्रा एक जन आंदोलन में बदल गई है। जहां भी मोदी की गारंटी वाली गाड़ी पहुंच रही है, लोग बहुत अपनेपन के साथ स्वागत कर रहे हैं। इससे अब तक 15 करोड़ लोग जुड़ चुके हैं। देश की लगभग 70-80 प्रतिशत पंचायतों तक ये यात्रा पहुंच चुकी है। विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों के आंकड़े साझा करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि करोड़ों-लाखों की ये संख्या किसी के लिए महज आंकड़े हो सकते हैं, लेकिन मेरे लिए ये हर संख्या सिर्फ आंकड़ा नहीं है, मेरे लिए ये एक जीवन है, मेरा वो भारतीय भाई या बहन है, मेरा परिवारजन है, जो अब तक योजना के लाभ से वंचित था। इसलिए हमारा प्रयास है कि हर क्षेत्र में हम सैचुरेशन की ओर बढ़ें।

25 करोड़ लोग गरीबी से निकले बाहर

प्रधानमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार के पिछले 9 वर्षों में करीब-करीब 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं।

'फरवरी में भी चलगी विकसित भारत संकल्प यात्रा'

पीएम ने कहा कि भारत में गरीबी कभी कम हो सकती है, ये कोई सोच भी नहीं सकता था। भारत के गरीबों ने ये करके दिखाया है कि अगर गरीबों को साधन मिले, संसाधन मिले तो वह गरीबी को परास्त कर सकते हैं।

नेता के कार्यक्रमों में भीड़ जुटाने योग्य थे स्वयं सहायता समूह

पीएम मोदी ने स्वयं सहायता समूहों के लिए अपनी सरकार द्वारा उठाए कदमों का उल्लेख करते हुए कहा कि आज के कार्यक्रम में भी हमने देखा कि कैसे सेल्फ हेल्प ग्रुप से जुड़ने के बाद बहनों के जीवन में अभूतपूर्व बदलाव आया है। 2014 के पहले देश में सेल्फ हेल्प ग्रुप बनाना महज कागजों में ही सिमटा हुआ एक सरकारी कार्यक्रम था। ज्यादातर किसी नेता के कार्यक्रम के लिए भीड़ इकट्ठा करने योग्य होते थे। स्वयं सहायता समूह कैसे आर्थिक रूप से मजबूत बनें, इस पर पहले ध्यान नहीं दिया जाता था।

फरवरी में भी चलेगी यात्रा

विकसित भारत संकल्प यात्रा की समयावधि फरवरी तक बढ़ाई जा सकती है। पीएम ने खुद कहा कि पहले यह यात्रा 26 जनवरी तक निकालने के लिए सोचा था, लेकिन गांव-गांव से लोग कह रहे हैं कि मोदी की गारंटी वाली गाड़ी हमारे यहां आनी चाहिए।

'ग्रामीण इलाकों में घरों का आकार भी बढ़ाया गया'

पीएम ने कहा कि इसे देखते हुए सरकार के अफसरों से कहा है कि अब 26 जनवरी तक नहीं, थोड़ा आगे बढ़ाओ। लोगों को जरूरत है, लोगों की मांग है तो इसको हमें पूरा करना होगा। इसलिए थोड़े दिन के बाद तय हो जाएगा कि मोदी की गारंटी वाली गाड़ी शायद फरवरी में भी चलाएंगे। ग्रामीण इलाकों में घरों का आकार भी बढ़ाया गया है। पहले घर कैसे बनेंगे, इसमें सरकार दखल देती थी। अब लोग अपनी पसंद के घर बना रहे हैं।

पीएम ने आगे कहा कि पहले की सरकारों में जहां घर बनने में 300 से ज्यादा दिन लग जाते थे, वहीं अब पीएम आवास के घरों के निर्माण का औसत 100 दिन के आसपास का है। हमारी सरकार कैसे वंचितों को वरीयता दे रही है, इसका एक उदाहरण ट्रांसजेंडर समाज भी है। आजादी के बाद इतने दशकों तक ट्रांसजेंडर्स को किसी ने नहीं पूछा। हमारी सरकार ने पहली बार हमारे किन्नर समाज की मुश्किलों की चिंता की। हमारी सरकार की प्राथमिकता ग्रामीण अर्थव्यवस्था को आधुनिक बनाने, किसानों को सशक्त करने की है। सरकार की कोशिश है कि छोटे किसानों की ताकत बढ़े।

पशुओं को विभिन्न बीमारियों से बचाने के लिए आजादी के बाद पहली बार अभियान चलाकर 50 करोड़ से ज्यादा जानवरों को टीके लगवाए जा चुके हैं। इस पर 15 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा खर्च हो चुके। इस अभियान का भी नतीजा है कि देश में दूध उत्पादन 50 प्रतिशत से ज्यादा बढ़ा है।

सेल्फी के चक्कर में गई जान: हरणी झील में बच्चों को ले जा रही नाव पलटी, दो शिक्षकों समेत 16 की मौत

वडोदरा

गुजरात के वडोदरा की हरणी मोटनाथ झील में बच्चों को ले जा रही एक नाव पलट गई। वड़ोदरा पुलिस ने बताया कि हादसे में 16 लोगों की मौत हो गई है। मरने वालों में 14 बच्चे और दो शिक्षक शामिल हैं। नाव में 27 बच्चे सवार थे, जोकि पिकनिक मनाने जा रहे थे।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने दुर्घटना पर शोक जताया है। मिली जानकारी के मुताबिक, वडोदरा के न्यू सनराइज स्कूल के 23 बच्चे और 4 शिक्षक पिकनिक मनाने के लिए हरणी झील गए थे। लोगों का कहना है कि सेल्फी लेने के लिए सभी बच्चे और शिक्षक नाव में एक ओर पहुंच गए। इससे नाव बेकाबू होकर पलट गई। नाव में सवार बच्चे और शिक्षकों ने लाइफ जैकेट भी नहीं पहनी थी। उनकी आवाज सुनकल आस-पास के लोग बचाने के लिए दौड़े। जब तक बचाव और राहत टीमें वहां पहुंची तब तक कई बच्चों को बचाया जा चुका था। बचाव और राहत कार्य में राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन बल (एनडीआरएफ) और फायर ब्रिगेड के साथ ही अन्य एजेंसियों को भी लगाया गया। वडोदरा के जिला कलेक्टर एबी गोर ने इस बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि नाव पर 27 बच्चे थे। वडोदरा के जिलाधिकारी एबी गौड़ ने बताया कि नाव की क्षमता 16 लोगों की थी लेकिन इसमें 27 लोग सवार थे। हादसे के बाद बचाए गए बच्चों और शिक्षकों को जाह्नवी अस्पताल में भर्ती कराया गया। उन्होंने कहा कि हम अन्य लोगों का पता लगाने और उन्हें बचाने की कोशिश कर रहे हैं। गुजरात के शिक्षा मंत्री कुबेर डिंडोर ने भी इस हादसे पर दुख जताया और कहा कि मुझे अभी पता चला है कि स्कूली छात्रों को ले जा रही एक नाव झील में पलट जाने से छह बच्चों की मौत हो गई।

'सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च के खिलाफ कार्रवाई 'असंवैधानिक'

नई दिल्ली

केंद्रीय गृह मंत्रालय (एमएचए) ने हाल ही में सीपीआर का एफसीआरए लाइसेंस रद्द किया है। मंत्रालय ने सीपीआर पर भारत के आर्थिक हितों को प्रभावित करने के लिए विदेशी फंडिंग का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया है।

वहीं, एफसीआरए लाइसेंसस रद्द करने को लेकर थिंक टैंक का कहना है कि यह उसकी 'समझ से बाहर' है और वह इसके खिलाफ कानूनी कदम उठाएगा। .

सोशल मीडिया पर पूर्व केंद्रीय मंत्री ने क्या कहा

चिदंबरम ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर एक पोस्ट की। इसमें उन्होंने लिखा कि अगर स्वतंत्र शोध और विचार (सरकार की) आर्थिक नीतियों में कमियों की ओर इशारा करते हैं, तो यह देश के लिए अच्छा है। मैं तो कम से कम यही सोचता हूं। लेकिन, सरकार सोचती है कि इस तरह के शोध और विचारों से भारत के आर्थिक हितों को नुकसान पहुंचता है। भारत के आर्थिक हितों का आखिरी जज कौन है? सरकार या जनता?

खत्म हो जाएगी सीपीआर की अकादमिक आजादी

पूर्व केंद्रीय वित्त मंत्री ने कहा, अगर शोध और विचार अगर सरकार की लाइन के अनुरूप होते हैं, तो यह (सीपीआर की) अकादमिक स्वतंत्रता को खत्म करने जैसा होगा।

शायद सरकार को लगता है कि जब नीति आयोग है तो किसी और को शोध क्यों करना चाहिए और राय क्यों देनी चाहिए?

शंकराचार्य ने उठाया सवाल- नई प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा, तो पुरानी मूर्ति का क्या होगा?

नई दिल्ली

ज्योतिष पीठ के शंकरराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने श्री रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट से प्रश्न किया है कि यदि नई मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा की जाएगी, तो रामलला की पुरानी मूर्ति का क्या होगा? उन्होंने विवादित ढांचे में अद्भुत चमत्कार के साथ प्रकट हुई रामलला की मूर्ति को पहले से ही जन्मस्थान पर विराजमान बताते हुए कहा है कि नई मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा से, पहले से ही विराजमान भगवान राम की मूर्ति की उपेक्षा हो सकती है। हालांकि, इसके पूर्व ही श्री रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने एक प्रेस कांफ्रेंस कर बताया था कि रामलला की पुरानी मूर्ति को मंदिर के अंदर ही दूसरे स्थान पर विराजमान किया जाएगा। शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने श्री रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्य गोपाल दास को पत्र लिखते हुए कहा है कि रामलला ने अपने जन्म स्थान पर रहकर कई कष्ट सहे हैं, उन्होंने अपना अपना मुकदमा लड़कर अपना जन्म स्थान पाया है। उनके साथ राम मंदिर आंदोलन में जान गंवाने वाले अनेक आंदोलनकारियों की यादें जुड़ी हैं। स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने कहा है कि अदालत में यह तर्क भी दिया गया था कि रामलला एक जीवित एंटिटी हैं, उनकी मूर्ति को न तो हटाया जा सकता है, और न ही उनकी मूर्ति को बदला जा सकता है। ऐसे में रामलला की नई मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा उन तर्कों को गलत करार देने जैसा भी है। ट्रस्ट ने बताया था विश्व हिंदू परिषद (विहिप) के संयुक्त महासचिव डॉ. सुरेंद्र जैन ने कहा कि श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने एक प्रेस कांफ्रेंस में इस प्रश्न का जवाब दे दिया था। उन्होंने बताया था कि रामलला की पुरानी प्रतिमा को नवनिर्मित मंदिर के अंदर ही एक अन्य स्थान पर स्थापित किया जाएगा।

मनरेगा जॉब कार्ड का होगा सत्यापन: कोलकता हाईकोर्ट

कोलकाता

कलकत्ता उच्च न्यायालय ने गुरुवार पश्चिम बंगाल में मनरेगा के जॉब कार्ड के सत्यापन के लिए चार सदस्यीय समिति का गठन करने का आदेश दिया। यह समिति जिलेवार जॉब कार्ड का सत्यापन करेगी। अदालत में एक जनहित याचिका (पीआईएल) दायर की गई थी। जिसमें इस योजना के तहत वास्तविक श्रमिकों को मजदूरी जारी करने की मांग की गई थी।

केंद्र और राज्य सरकार का एक-दूसरे पर आरोप

पश्चिम बंगाल सरकार का आरोप है कि केंद्र सरकार महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) के तहत राज्य को पैसा आवंटित नहीं कर रही है। जबकि, केंद्र का दावा है कि पहले दिए गए पैसे का गलत इस्तेमाल किया गया है और फर्जी जॉब कार्ड बनाए गए हैं।

चार सदस्यीय समिति में शामिल होंगे अधिकारी

उच्च न्यायालय ने आदेश दिया कि मनरेगा के लिए वास्तविक जॉब कार्ड की सत्यापन प्रक्रिया चार अधिकारियों की एक समिति करेगी। इस प्रक्रिया को जिलेवार तरीके से किया जाएगा। इस चार सदस्यीय समिति में एक अधिकारी केंद्र सरकार, एक पश्चिम बंगाल सरकार, एक नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (सीएजी) से और एक महालेखाकार (पश्चिम) कार्यालय से शामिल होंगे। याचिका पर मुख्य न्यायाधीश टीएस शिवागननम की अध्यक्षता में खंडपीठ ने सुनवाई की।

कमलनाथ-नकुलनाथ भी राम भक्ति में लीन

भोपाल

कांग्रेस नेतृत्व ने भले ही अयोध्या के राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह का न्योता ठुकरा दिया हो, लेकिन कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और मध्यप्रदेश के पूर्व सीएम कमलनाथ राम भक्ति में लीन नजर आ रहे हैं। कमलनाथ छिंदवाड़ा से 4 करोड़ 31 लाख राम नाम लिखे पत्रकों को अयोध्या भेजने की तैयारी कर रहे हैं। दरअसल, 22 जनवरी के उत्सव को ध्यान में रखते हुए छिंदवाड़ा की मारुति नंदन सेवा समिति ने 21 दिनों का श्रीराम महोत्सव का आयोजन किया है। इस महोत्सव में संस्थान लोगों को राम नाम के पत्रक बांट रहा है। इसमें रामभक्तों और लोगों से 108 बार राम लिखकर वापस देने के लिए कहा जा रहा है। समिति की कोशिश है कि राम नाम के इस रिकॉर्ड संग्रह को प्राण प्रतिष्ठा उत्सव के दौरान ही अयोध्या पहुंचाया जाए।

फिर आया कोहरे का अलर्ट, अगले पांच दिन दो डिग्री तक कम होगा पारा

नई दिल्ली

मौसम विभाग ने कोहरे को लेकर एक बार फिर से अलर्ट जारी किया है। विभाग के मुताबिक अगले पांच दिनों तक रात और सुबह तेज कोहरे का अनुमान लगाया गया है। इसके अलावा मैदानी इलाकों में चल रही शीत लहर में भी फिलहाल किसी तरह की कोई कमी का अंदेशा नहीं है। विभाग के मुताबिक अधिकतम तापमान में फिलहाल कोई खास बढ़ोतरी नहीं होने वाली है। हालांकि न्यूनतम तापमान में दो डिग्री सेल्सियस की कमी दर्ज हो सकती है।

मौसम विभाग के मुताबिक गुरुवार की रात से पश्चिम विक्षोभ के चलते कुछ साइक्लोनिक सकुर्लेशन ऐसे बने हैं, जिससे कोहरे के बढ़ने का अनुमान लगाया गया है। विभाग के वैज्ञानिक डॉक्टर मनमोहन पांडव कहते हैं कि यह साइक्लोनिक सकुर्लेशन पश्चिमी उत्तर भारत के हिस्से में है। समुद्र तल से करीब डेढ़ किलोमीटर ऊपर बनी इन परिस्थितियों के चलते मौसम में कुछ बदलाव देखे जा सकते हैं। इसमें तेज कोहरे का अनुमान लगाया गया है। विभाग के वैज्ञानिकों के मुताबिक यह कोहरा घना होगा। इसके अलावा कोहरे के पड़ने की समय सीमा भी बढ़ने का अनुमान है। विभाग के वैज्ञानिकों का मानना है कि साइक्लोनिक सकुर्लेशन के चलते उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब, चंडीगढ़ और हरियाणा के हिस्सों में कोहरे की सघनता बढ़ेगी। बुधवार की रात से बदले हुए मौसम के कारण हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़ और उत्तर प्रदेश के इलाकों में यह कोहरा पड़ना शुरू होगा। हालांकि पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता और साइक्लोनिक सकुर्लेशन का असर सोमवार की रात तक बने रहने का अनुमान है। मौसम विभाग ने कोहरे की सघनता वाले राज्यों के लिए भी अलर्ट जारी कर उनको सूचित कर दिया है। मौसम विभाग में राष्ट्रीय राजमार्ग संचालन से जुड़ी सरकारी एजेंसियों से भी कोहरे के इस अलर्ट को साझा किया गया है, ताकि राजमार्गों और एक्सप्रेस-वे पर चलने वाले वाहनों को लेकर एडवाइजरी जारी की जा सके।

मौसम विभाग के मुताबिक अगले कुछ दिनों में न्यूनतम तापमान में अनुमानतः दो डिग्री की गिरावट दर्ज हो सकती है। जबकि अधिकतम तापमान में भी इतने ही तापमान की गिरावट दर्ज होने का अनुमान है। जबकि अधिकतम तापमान उन इलाकों में कम होगा, जहां पर ठंडी हवाएं अपना असर दिखाएंगी। वहीं विभाग के वैज्ञानिकों के मुताबिक समुद्र तल से तकरीबन बारह किलोमीटर ऊपर इस वक्त भी तकरीबन 140 से 160 समुद्री मील (ढाई सौ से पौने तीन सौ किलोमीटर) प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं बह रही हैं। मौसम विभाग के वैज्ञानिकों के मुताबिक जेट स्ट्रीम हवाओं के चलते मैदानी इलाकों में ठंडक बढ़नी शुरू हुई है। उनका कहना है कि भारत खासतौर से मैदानी इलाकों में इसकी वजह से न सिर्फ गलन बढ़ रही है, बल्कि जेट स्ट्रीम हवाओं के लगातार बने रहने से न्यूनतम तापमान में गिरावट भी दर्ज हुई है।

उत्सव मनाने को तैयार राम भक्तों के लिए भगवा ध्वज व चित्र से सजा बाजार

अखंड भारत संदेश

सहसों। सहसों सहित आसपास के बाजार अयोध्या में 22 जनवरी को होने वाले प्राण प्रतिष्ठा को लेकर बाजार भगवा ध्वज एवं भगवान राम की प्रतिमा से सज गया है। बाजार में भगवा ध्वज पर प्रभु श्री राम का चित्र अंकित बड़े ध्वज से लेकर छोटे ध्वज तक बिकने के लिए सजाए गए हैं। इस के अतिरिक्त हनुमान जी की भी अंकित ध्वज पताका भगवा रंग में दुकानों पर बिक्री के लिए लहरा रहा है। आगामी 22 तारीख को मंदिरों में तथा हर घर में दीपावली मनाने को लेकर लोग तैयारी में जुटे हुए हैं। वहीं पर रामनगर, कांदी, कोतारी एवं चिरौरा स्थित कुम्हारों का पूरा कुनबा भी मांग के अतिरिक्त दीवाली बनाकर दीपोत्सव मनाने के लिए उत्साहित है। दुकानदार यादवेंद्र पांडे, राहुल गुप्ता, सेठ सोहनलाल केसरवानी, राजकुमार गुप्ता, जयेश केसरवानी आदि का कहना है कि हर सनातनी के घर में भगवान राम का ध्वज पताका लहराएगा। जिसके लिए लोग जोरों से खरीदारी कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त हम सब स्वयं अपने अपने घरों में दीप जलाकर भगवान राम की पूजा अर्चना के साथ ध्वज पताका लहरा कर उत्सव मनाएंगे।

बुढ्ढी माता मंदिर से निकली कलश शोभा यात्रा

अखंड भारत संदेश

झूंसी। अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि में 22 जनवरी को आयोजित रामलला के नूतन विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर गुरुवार को कोटवा बुढ्ढी माता मंदिर से कलश शोभा यात्रा निकाली गई। कलश शोभा यात्रा बाबा वाली बाजार होते कोटवा चौराहा शिव मंदिर से राणा प्रताप गेट पहुची जहा बजरंग बली मंदिर में पूजा अर्चना कर यात्रा का समापन हुआ। यात्रा में शामिल ग्रामीण हाथों में भगवा ध्वज लिए डीजे पर बज राम राज्य के गीत पर थिरके हुए जय श्री राम व भारत माता की जय का घोष कर रहे थे। जगह-जगह कलश का पूजन कर लोगों ने पुष्प वर्षा की। इस मौके पर खंड संघचालक ज्ञानेंद्र, सह खंड कार्यवाह आकाश, आजाद, मनु प्रताप सिंह, पूर्व ब्लाक प्रमुख बहादुरपुर राजकुमार सिंह रिंकू , ग्राम प्रधान कोटवा जयराम सिंह, प्रांत समरसता प्रमुख भूपेंद्र प्रताप, अवधराज, शाषिकेद्र, शिवकुमार, तारा सिंह, पंकज, अमन मिश्रा, हर्ष, आर्यन, अभिराम अंशुमान आदि जनमानस राम जी की यात्रा में उपस्थित रहे।

अयोध्या राम मंदिर प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में जंघई में रामकथा का आयोजन

जंघई। अयोध्या राम मंदिर प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में जंघई रामजानकी मंदिर कुटी में क्षेत्रवासियों द्वारा पंच दिवसीय राम कथा आयोजित किया गया है। कथा के दूसरे दिन कथा व्यास आचार्य धीरज द्विवेदी याज्ञिक ने शिव विवाह, नारद मोह आदि प्रसंग पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कथा जब धर्म पर कुठाराघात होता है तभी धरती पर ईश्वर का अवतार होता है। शिव विवाह का सुंदर वर्णन करते हुए नारद मोह भंग की कथा का सविस्तार वर्णन किया जिसे सुनकर दर्शक भाव विभोर हो गए। कथा वाचक ने बताया कि जब भगवान शिव ने पार्वती को बताया कि देवर्षि नारद ने हरि (विष्णु) को श्राप दिया था तो वे बड़ी चकित हुईं और बोलीं नारद तो विष्णुभक्त और अत्यन्त ज्ञानी हैं, फिर उन्होंने भगवान को श्राप किस कारण से दिया। शिव ने हंस कर कहा कि इस संसार में न तो कोई ज्ञानी है और न मूर्ख। रघुनाथ जब जिसको जैसा करते हैं, वह उसी क्षण वैसा ही हो जाता है। उन्होंने नारद मोह भंग से लेकर विष्णु अवतार तक की कथा का प्रसंग सुनाया जिसे सुनकर श्रद्धालु भाव विभोर हो गए। इस अवसर पर महंथ चन्द्रमा दास महाराज, अशोक दुबे, किशन पाठक, अनिल दुबे, अमित सिंह, राजू भाई साहब, चंद्रभूषण तिवारी आदि सहित क्षेत्र के रामभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

न्यूज झरोखा

शिव मंदिर प्रांगण में राम आयेंगे भाग्य खुल जायेंगे झोपड़ी के थाप पर झूमे श्रोता

करछना प्रयागराज विकासखंड करछना के प्रांगण में ब्लाकेश्वर महादेव शिव मंदिर पर गुरुवार को भक्तों के जमावड़े में राम की धूम दिखाई पड़ी बड़ी संख्या में राम भक्तों ने बालेश्वर महादेव शिव मंदिर पर राम की धूम झोपड़ी के भाग खुल जाएंगे के भजन से श्रोताओं से गुलजार रहा शिव मंदिर भजन कीर्तन के दौरान विकासखंड करछना के प्रधान संघ के अध्यक्ष अवतार किशन सिंह एडवोकेट महा मंत्री धीतेश तिवारी धीरू के नेतृत्व में आयोजित कार्यक्रम भजन संध्या कीर्तन एवं अयोध्या राम मंदिर को लेकर राम भक्तों शिव भक्तों का जमावड़ा करछना ब्लॉक परिसर में लगा जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं एवं प्रधान संघ के सदस्यों ने भाग लिया सुबह से देर शाम तक भजन कीर्तन एवं राम की महिमा गुणगान को लेकर संगीतकारों ने भजन के माध्यम से राम की अयोध्या पर गुणगान करते हुए भक्ति गीतों से शराबोर रहे और ब्लॉक परिसर में श्रद्धालुओं की भीड़ जुटी रही इस अवसर पर मनरेगा प्रभारी मनीष शुक्ला अकाउंटेंट सोनू सिंह आवास बाबू बृजेश द्विवेदी सहित ब्लॉक के बड़ी संख्या में कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने शिव मंदिर पर भक्ति संध्या में सराबोर नजर आए और पूजा पाठ कर प्रसाद वितरण किया।

विकसित भारत कार्यक्रम में दी गई जन कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी

सहसों। विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम का आयोजन विकास खण्ड बहादुरपुर के ग्राम सभा कांदी एवं मदारपुर में आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि सहसों मंडल महामंत्री पवन कुमार शुक्ला ने बताया कि आज देश प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा सशक्त और मजबूत हो रहा है। गरीबों के कल्याण के लिए प्रधानमंत्री आवास, मुख्यमंत्री आवास, उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत, हर घर नल एवं मुफ्त शौचालय जैसी विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं को गरीबों तथा आम जनमानस के लिए चलाई जा रही है। जिससे भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाना है जिसमें जन सहयोग एवं सहभागिता बहुत ही जरूरी है। कार्यक्रम में आए हुए ग्रामीण को विकसित भारत के लिए शपथ भी दिलाई गई। कार्यक्रम में मुख्य रूप से ग्राम प्रधान सरस्वती देवी, संतोष सिंह, विमल मिश्रा, सोनम कनौजिया, सतीश कुमार, विजय कुमार गुप्ता आदि उपस्थित रहे।

खंड शिक्षा अधिकारी कार्यालय में चलाया गया स्वच्छता अभियान

बीइओ उरुवा ने ब्लॉक के सभी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को उक्त कार्य को गंभीरता पूर्वक करने हेतु किया निर्देशित

अखंड भारत संदेश

मेजा। विकास खंड उरुवा के खंड शिक्षा अधिकारी कार्यालय में प्रमुख सचिव उत्तर प्रदेश शासन व शिक्षा निदेशक (बेसिक) उत्तर प्रदेश लखनऊ तथा जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रयागराज के आदेश के क्रम में ब्लॉक के समस्त शिक्षण संस्थानों/विद्यालयों में 14 से 21 जनवरी 2024 तक स्वच्छता अभियान चलाते हुए तथा 22 से 26 जनवरी 2024 तक दीपदान करने के लिए विद्यालय एवं कार्यालय स्तर से समस्त तैयारी पूरी कर ली गई है। उसी क्रम में कल 18 जनवरी को खंड शिक्षा अधिकारी कार्यालय उरुवा में एबीएसए उरुवा कैलाश सिंह, कार्यालय प्रभारी रोहित त्रिपाठी तथा कार्यालय के अन्य कर्मचारियों ने स्वच्छता अभियान चलाकर कार्यालय की साफ सफाई की। वहीं 17 जनवरी को बीएसए प्रयागराज ने जनपद के समस्त खंड शिक्षा अधिकारियों के साथ बैठक में यह निर्णय लिया गया है कि 18 जनवरी 2024 को सभी संस्थाओं / विद्यालयों / कार्यालयों में एक साथ अभियान चलाते हुए साफ सफाई की जायेगी और स्वच्छता / साफ सफाई का यह अभियान 21 जनवरी तक चलता रहेगा तथा इसी तरह से 22 से 26 जनवरी 2024 तक विद्यालयों में दीपदान किया जाएगा। वहीं खंड शिक्षा अधिकारी उरुवा कैलाश सिंह ने ब्लॉक के सभी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों व इंचार्ज प्रधानाध्यापकों को उक्त कार्य को गंभीरता पूर्वक करने हेतु निर्देशित किया है और कल ब्लॉक के सभी परिषदीय विद्यालयों में साफ सफाई का कार्य तेजी के साथ हुआ।

खण्ड शिक्षा अधिकारी धनूपुर ने चलाया सफाई अभियान

प्रयागराज। शासन के मंशा के अनुरूप सचिव उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद के आदेशानुसार अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि में प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के दृष्टिगत आगामी दिनाँक 14 जनवरी से 21 जनवरी तक सभी परिषदीय विद्यालयों के परिसर कक्षा- कक्ष, व उसके आस- पास गंदगी व प्लास्टिक आदि की पूरी तरह से साफ करने हेतु आदेशित किया। उक्त आदेश के अनुक्रम में गुरुवार को विकास खण्ड के कई विद्यालयों में खण्ड शिक्षा अधिकारी डॉ प्रभा शंकर पांडेय स्वयं जाकर साफ -सफाई किए जिससे विद्यालय स्वच्छ व सुंदर दिखे।साथ ही साथ 22 से 26 जनवरी के मध्य सभी विद्यालयों के भवनों को प्रकाशित करने हेतु सभी विद्यालयों के प्रमुखों को गूगल मीट के माध्यम से आदेशित भी किया।

नाव से घर वापस लौट रहा बुजुर्ग गंगा नदी में गिरा, डूबने से मौत

मेजा। किसी कार्य से नाव द्वारा गंगापार हंडिया गए एक बुजुर्ग की वापस लौटते समय अधिक ठंड के कारण नाव से गिरकर डूबने से मौत हो जाने का मामला प्रकाश में आया है। सूचना पर मौके पर पहुंची सिरसा पुलिस काफी मशक्कत के बाद मृतक बुजुर्ग का शव बाहर निकाला तो परिजनों में कोहराम मच गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार मेजा थाना क्षेत्र के सिरसा पुलिस चौकी अंतर्गत सिरसा छतवा घाट पर बुजुर्ग नाव से उस पार हंडिया गांव के सामने किसी काम से गया था उस पार से नाव द्वारा वापस घर लौटते समय अधिक ठंड के कारण वह नाव से गिर कर डूब गया । सूचना पर सिरसा चौकी प्रभारी कुलदीप शर्मा माय फोर्स मौके पर पहुंचे ग्रामीण और सिरसा चौकी प्रभारी के दो घंटे तक काफी मशक्कत के बाद बुजुर्ग का शव बाहर निकला गया तब तक बुजुर्ग की मौत हो गई थी। बताया जाता है कि बुजुर्ग दुमदुमा घाट पर घास के लिए गया हुआ था बुजुर्ग का नाम पन्नालाल निषाद और उम्र लगभग 65 वर्ष बताई गई है। फिलहाल बुजुर्ग की अचानक हुई मौत से परिजनों में कोहराम मचा हुआ है।

तबादला होने पर कस्बावासियों ने गले लगाकर दी विदाई

एसओ मनोज कुमार सिंह का क्राइम ब्रांच में किया गया तबादला एसएसआई अश्विनी कुमार ने संभाली शंकरगढ़ थाने की कमान

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। शंकरगढ़ के थानाध्यक्ष रहे मनोज कुमार सिंह को पूरी गर्मजोशी के साथ मंगलवार को विदाई दी गई। शंकरगढ़वासियों के द्वारा आयोजित विदाई कार्यक्रम में लोगों ने उनके कार्यकाल को याद किया। मनोज कुमार सिंह का तबादला क्राइम ब्रांच में किया गया है। उनके स्थान पर फिलहाल के लिए एसएसआई अश्विनी कुमार को शंकरगढ़ थाने का चार्ज सौंपा गया है।

बतौर थानाध्यक्ष मनोज कुमार सिंह ने 22 महीने तक शंकरगढ़ थाने की कमान संभाली। 15 जनवरी की रात उनके क्राइम ब्रांच में तबादले का आदेश शंकरगढ़ थाने पहुंचा। मंगलवार को सुबह एसओ शंकरगढ़ के यहां से जाने की सूचना कस्बे में पहुंची तो तमाम लोग विदाई देने के लिए शंकरगढ़ थाने पहुंच गए। क्षेत्र की जनता के बीच अपने मिलनसार स्वभाव और जुझारू प्रवृत्ति के चलते एसओ महोदय ने लोगों के बीच अपनी एक अलग ही जगह बना ली थी। अपराधियों में भी मनोज कुमार सिंह के नाम का खौफ था। थाने में मनोज कुमार सिंह को विदाई देने वालों में गोपाल दास गुप्ता, व्यापार मंडल अध्यक्ष मूलचंद गुप्ता, महामंत्री रतन केसरवानी, शिक्षक बृजेश सिंह, शेर सिंह, मंडल अध्यक्ष अखिलेश सिंह, ज्ञानेंद्र मिश्र, सुजीत केसरवानी, गुड्डा मिश्रा, सुरेश केसरवानी, रामबाबू सिंह, उमा वर्मा, नेहा सिंह, ज्योति कनौजिया, जय केसरवानी, अजय केसरवानी, राजू केसरवानी, दिवाकर सिंह, राजेश कुमार, मुकेश पाठक समेत पूरा स्टाफ मौजूद रहा।

अल्हवा में आयोजित क्रिकेट टूर्नामेंट में बड़ोखर की टीम हुई विजयी

अखंड भारत संदेश

ग्राम प्रधान लीडर शहजादे ने विजेताओं को नकद राशि और मेडल देकर किया सम्मानित कहा खेल में हार जीत स्वाभाविक है

कोरांव। तहसील कोरांव के ग्राम पंचायत अल्हवा में गत 12 जनवरी से प्रारंभ मिस्कीन सेवा संस्थान ट्रस्ट,ग्राम पंचायत अल्हवा पंचायतीराज एवं युवक मंगल दल अल्हवा की जानिब से क्रिकेट टूनार्मेंट का आयोजन बृहस्पतिवार को 18 जनवरी 2024 को समाप्त हो गया। फाइनल खेल में अल्हवा और बड़ोखर की टीम में जबरजस्त मुकाबला हुआ,जिसमें चार विकेट से अल्हवा टीम को पीट कर प्रथम स्थान बड़ोखर ने प्राप्त किया और दूसरा स्थान ग्राम पंचायत अल्हवा की टीम को मिला। खिलाड़ियों को सम्मानित तथा पुरुष्कृत करते हुए समारोह में मुख्य अतिथि अहद अहमद सिद्दीकी उर्फ. शहजादे वरिष्ठ पत्रकार मंत्री अखिल भारतीय प्रधान संगठन उत्तर प्रदेश प्रयागराज मंडल ने खिलाड़ियों की हौंसला अफजाई करते हुए कहा कि खेल में हार जीत का गहरा रिश्ता होता है। एक न एक टीम को जितना और एक टीम को हारना आवश्यक है। उन्होंने खिलाड़ियों को भविष्य में अपने खेल के प्रदर्शन को बेहतर ढंग से प्रदर्शित करने का आह्वान किया। प्रधान शहजादे ने विजेता टीम बड़ोखर कैप्टन सुरेंद्र सिंह सहित ग्यारह खिलाड़ियों को मेडल के साथ ट्रॉफी और नकद 7500 रुपए दे कर सम्मानित किया।साथ ही उप विजेता टीम अल्हवा को भी ट्रॉफी दे कर अच्छा प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को सम्मानित किया। सम्मानित करने वालों में से प्रधान अल्हवा शहजादे के अतिरिक्त सूर्यबली पाण्डेय पूर्व प्रधान अजीज अहमद सिद्दीकी उर्फ. अच्छे,नेहाल अहमद,मो नसीम,रवि सिंह पटेल,रामाश्रय आदिवासी आदि ने भी खिलाड़ियों को सम्मानित किया। टूनार्मेंट में इतने दिनों तक कई टीमों ने खेल खेला और अपने कलाओं से दर्शकों का मन मोहा। टूनार्मेंट में अनस अहमद युवक मंगल अध्यक्ष अल्हवा प्रधान प्रतिनिधि ने पूरे खेल की ऐंकरिंग की। बल्ले बाजी में अल्हबा के सैफ, सेबू, शाकिब, फैसल, नेसार, राजू, विवेक आदि ने बेहतर प्रदर्शन किया।

नाली विवाद के विवाद में लोहे की राड से सिर पर हमला, हालत नाजुक

करछना। ग्राम पुरैनी करछना प्रयागराज में आपसी विवाद को लेकर अधेड़ पर रम्मा से वार हालत गंभीर पुरैनी ग्राम निवासी राम सेवक पुत्र अंबर निवासी पुरैनी का पड़ोसी सीताराम पुत्र राम जी से नाली में पानी को लेकर कहासुनी हो गई जिसके बाद सीताराम ने राम सेवक के ऊपर लोहे को रॉड से सिर पर प्रहार कर दिया जिससे राम सेवक गंभीर चोट के कारण गिर पड़े सूचना पर परिजनों ने तत्काल सीएचसी करछना लेकर गए जहां हालत गंभीर होने पर रफ्फ के लिए रेफर कर दिया जहां घायल की हालत नाजुक बनी हुई है विपक्षी के विरुद्ध करछना थाने में तहरीर दी गई है।

मांडा दशमियहवा मैदान में 11 दिवसीय टूनार्मेंट कार्यक्रम सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

मांडा। मांडा खास के दशमियहवा मैदान में चल रहे 11 दिवसीय स्व. अनंत विजय द्विवेदी स्मृति क्रिकेट प्रतियोगिता का स्मृति कप विंध्यवासिनी क्रिकेट क्लब मांडा खास मेजबान टीम का कब्जा रहा। जिसमे रोहित व आलोक यादव के धुआधार पारियों से रोहित इलेवन विंध्याचल को पटखनी देकर फाइनल अपने नाम की। क्रिकेट प्रतियोगिता के समापन पर रोहित इलेवन विंध्याचल की टीम ने टास जीतकर पहले बल्लेबाजी का निर्णय लेते हुए निर्धारित दस ओवर में 122 रन बनाकर जीत के लिए 123 रन का लक्ष्य रखा। लक्ष्य का पीछा करते हुए मां विंध्यवासिनी क्रिकेट क्लब मांडा खास ने रोहित, आलोक के आतिसी बल्लेबाजी के बदौलत सात ओवर में ही जीत हासिल कर ली। मैन आफ द मैच सीरीज हिमांशु व मैन आफ द मैच दीपक को दिया गया। कार्यक्रम में समापन के मुख्य अतिथि अध्यक्ष प्रतिनिधि नपं. भारतगंज आमिर भाई शकील टंकी व विशिष्ट अतिथि दिलीप शुक्ल ने खिलाड़ियों का उत्साह वर्धन किया। क्रिकेट समापन के अवसर पर बनवारी प्रधान प्रतिनिधि राजमणि द्विवेदी, शंकर देव त्रिपाठी, ओंकारेश्वर प्रसाद द्विवेदी, अतुल वैभव द्विवेदी, प्रमोद द्विवेदी, सभासद चमन, शिव कांत पाठक, राघवेंद्र पाठक, गुड्डन द्विवेदी, राजेश द्विवेदी, राम लाल बिंद, राकेश द्विवेदी आदि तमाम लोग मौजूद रहे।

मण्डलायुक्त की अध्यक्षता में विकास कार्यों की समीक्षा बैठक सम्पन्न

कार्यों में लापरवाही बरतने एवं बैठक में अनुपस्थित रहने पर जीएमडीआईसी का वेतन रोकने तथा कार्यों में लापरवाही पाये जाने डीसी एनआरएलएम को चेतावनी जारी करने के दिए निर्देश

अखंड भारत संदेश

योजनाओं के क्रियान्वयन एवं निर्माण कार्यों में किसी भी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता क्षम्य नहीं

कार्यों को गुणवत्ता के साथ समयबद्ध ढंग से पूर्ण कराये जाने के दिए निर्देश

अभियान चलाकर राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजना, विधवा, दिव्यांग, वृद्वा पेंशन के लाभार्थियों को लाभान्वित कराये जाने के दिए निर्देश

आईजीआरएस से सम्बंधित शिकायतों का सयमसीमा के अंदर गुणवत्ता के साथ निस्तारण सुनिश्चित कराये जाने के दिए निर्देश

प्रयागराज। मण्डलायुक्त विजय विश्वास पंत गुरूवार को संगम सभागार में विकास कार्यों की समीक्षा करते हुए सभी सम्बंधित अधिकारियों को लक्ष्य के सापेक्ष योजनाओं का क्रियान्वयन पारदर्शी ढंग से शत-प्रतिशत क्रियान्वित करने एवं कार्यदायी संस्थाओं को निर्माण कार्यों को गुणवत्ता के साथ समय से पूर्ण किए जाने के निर्देश दिए है। उन्होंने हिदायत देते हुए कहा है कि कार्यों में लापरवाही या उदासीनता क्षम्य नहीं है। उन्होंने निर्माण कार्यों का नियमित अंतराल पर टीम के द्वारा निरीक्षण कराये जाने का भी निर्देश दिया है। आईजीआरएस की समीक्षा करते हुए मण्डलायुक्त ने सभी सम्बंधित अधिकारियों को शिकायतों का सयमसीमा के अंदर गुणवत्ता के साथ निस्तारण किए जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने यह भी निर्देशित किया है कि निस्तारण करने वाले अधिकारी स्वयं शिकायतकर्ता से निस्तारण के बारे में अवश्य बात करें। उन्होंने अधिक संख्या में असंतुष्ट फीडबैक प्राप्त होने वाले अधिकारियों के विरूद्ध कार्यवाही करने के निर्देश दिए है।मण्डलायुक्त ने उद्योग विभाग के कार्यों की समीक्षा करते हुए बैठक में अनुपस्थित रहने एवं योजनाओं के क्रियान्वयन में धीमी प्रगति पाये जाने पर उपायुक्त उद्योग पर कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए उनका वेतन रोके जाने का निर्देश दिया है साथ ही साथ प्रगति ठीक न पाये जाने पर उनके विरूद्ध विभागीय पत्राचार करने के लिए भी कहा है। एनआरएलएम के कार्यों की समीक्षा करते हुए बीसी सखी व अन्य कार्यों में प्रगति संतोषजनक न पाये जाने पर मण्डलायुक्त ने डीसी एनआरएल के विरूद्ध चेतावनी जारी करने का निर्देश दिया है साथ ही साथ कार्यों में लक्ष्य के सापेक्ष शत-प्रतिशत प्रगति लाये जाने का निर्देश दिया है। प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री आवास की समीक्षा में मण्डलायुक्त ने लक्ष्य के सापेक्ष शत-प्रतिशत प्रगति सुनिश्चित किए जाने का निर्देश दिया है। समाज कल्याण विभाग की समीक्षा करते हुए मण्डलायुक्त ने राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजना, विधवा, दिव्यांग, वृद्वा पेंशन के लाभार्थियों को अभियान चलाकर लाभान्वित कराये जाने के लिए निर्देशित किया है। मण्डलायुक्त ने स्वास्थ्य विभाग के कार्यों की समीक्षा करते हुए 102, 108 एम्बुलेंसों में मानक के अनुसार सभी आवश्यक व्यवस्थायें सुनिश्चित बनाये रखने के निर्देश मुख्य चिकित्साधिकारी को दिए है। उन्होंने बीएचएनडी को पूरी तरह से क्रियाशील बनाये रखने के निर्देश दिए है। स्वास्थ्य सम्बंधी योजनाओं के क्रियान्वयन में खराब प्रगति वाले प्रभारी चिकित्साधिकारियों का उत्तरदायित्व निर्धारित करते हुए उनके विरूद्ध कार्रवाई किए जाने के लिए कहा है। श्रृंगवेरपुर में निषादराज पार्क के दूसरे चरण की प्रगति धीमी पाये जाने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए मण्डलायुक्त ने कार्यदायी संस्था को कार्य को गुणवत्ता के साथ शीर्ष प्राथमिकता पर समय से पूर्ण कराये जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने गोआश्रय स्थलों की समीक्षा करते हुए वहां पर भूसा-चारा, पीने के पानी, हरा चारा एवं ठण्ड से बचाव हेतु आवश्यक व्यवस्थाएं बनाये रखने के निर्देश दिए है। इस अवसर पर जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल, मुख्य विकास अधिकारी गौरव कुमार, सीएमओ डॉ. आशु पाण्डेय, अपर जिलाधिकारी प्रशासन हर्ष देव पाण्डेय, एडीएम सिटी मदन कुमार सहित अन्य सम्बंधित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

मण्डलायुक्त ने राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ की बैठक

विकास कार्यों की बैठक के उपरांत मण्डलायुक्त ने राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ निर्वाचन सम्बंधी बैठक करते हुए उन्होंने राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों से उनके सुझाव लेते हुए उस सम्बंध में सम्बंधित को आवश्यक कार्यवाही किए जाने का निर्देश दिया है। मण्डलायुक्त ने मतदाता जागरूकता कार्यक्रम को और व्यापक स्तर पर चलाये जाने तथा मतदान केन्द्रों पर सभी आवश्यक व्यवस्थायें समय से सुनिश्चित कराये जाने का निर्देश दिया है। इस अवसर पर जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल, मुख्य विकास अधिकारी गौरव कुमार, अपर जिलाधिकारी प्रशासन हर्षदेव पाण्डेय सहित सभी ईआरओ तथा राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ अन्य सम्बंधित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

नए यमुना पुल से नदी में कूदा युवक गोताखोरों ने बचाया

प्रयागराज। नए यमुना पुल से एक युवक ने यमुना नदी में छलांग लगा दी। यह देख राहगीरों ने तत्काल पुलिस को सूचना दी। मौके पर मौजूद गोताखोरों ने कड़ी मशक्कत के बाद उसे बाहर निकाला। एंबुलेंस से उसे अस्पतालभेजा गया है। जानकारी मिलते ही परिवार के लोग पहुंच गए। मिली जानकारी के अनुसार खुल्दाबाद थाना क्षेत्र के बक्शी बाजार निवासी मिराज (35) पुत्र अलाउद्दीन ने बृहस्पतिवार दोपहर करीब एक बजे नए यमुना पुल से छलांग लगा दी। कूदने के तुरंत बाद पुल से गुजर रहे राहगीरों ने पुलिस को इसकी सूचना दी। हरकत में आए ईगल 24 व 25 के जवानों ने पानी में कूदकर और युवक को बाहर निकाल लिया। नाका चौकी प्रभारी आलोक रंजन ने बताया कि युवक को एसआरएन अस्पताल ले जाया गया। जहां उसका इलाज चल रहा है। घटना की जानकारी पाकर परिवार के लोग पहुंच गए। परिजनों के मुताबिक युवक की मानसिक स्थिति ठीक नहीं चल रही थी।

मऊआइमा में राम चरण पादुका का हुआ भव्य स्वागत फूलों की हुई पुष्प वर्षा

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। चित्र कूट से श्रृंगवेरपुर, सोरांव होते हुए मऊआइमा से अयोध्या को गया राम चरण पादुका का श्रद्धालुओं ने पूजा अर्चना कर पुष्प वर्षा की। मऊआइमा ब्लाक चौराहा, थाना पडाव चौराहे पर चित्रकूट से होते हुए अयोध्या नगरी को जाने वाले रामचरण पादुका का श्रद्धालुओं ने पुष्प वर्षा कर पूजा अर्चना किए। बताया गया है कि इस पादुका के निर्माण में एक किलो सोना सात सौ ग्राम चांदी का प्रयोग हुआ।इस अवसर पर मऊआइमा के बाबा सत्य नारायण मौर्या अन्तर्राष्ट्रीय कलाकार सहयोग सांस्कृतिक विभाग उत्तर प्रदेश,आर एस एस सहयोग दिनेश कुमार मौर्या, सत्येंद्र मणि शुक्ल, धर्म जागरण अशोक केसरवानी, आशीष चौरसिया, अजय अग्रहरि, राम पलट पटेल, राम सुन्दर मिश्रा, राजू शुक्ला, जिलाध्यक्ष कविता पटेल आदि मौजूद थे। इसके पूर्व एम एल सी सुरेंद्र चौधरी, निर्मला पासवान भी पुष्प वर्षा की।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जिला पोषण समिति की बैठक आयोजित सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल की अध्यक्षता में गुरूवार को संगम सभागार में जिला पोषण समिति की बैठक आयोजित की गयी। बैठक में जिलाधिकारी ने उपस्थित सभी अधिकारियों को बिना अनुमति मुख्यालय न छोड़ने के लिए कहा है। बैठक में जिलाधिकारी ने बाल विकास एवं सेवा पुष्टाहार विभाग द्वारा संचालित बाल विकास परियोजनाओं, पोषण टैकर एप पर फीडिंग, आंगनबाड़ी केन्द्रों के विद्युतीकरण, सीडीपीओ कार्यालय कोरांव के निर्माण कार्य की प्रगति, टीएचआर का वितरण, हॉटकुक्ड मील, आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों की टेनिंग, एनआरसी एडमिशन एवं बेड की उपलब्धता, ईसीसीई किट, नए आंगनबाड़ी केन्द्रों का प्रस्ताव भेजे जाने आदि बिंदुओं पर विस्तार से समीक्षा करते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने सभी सीडीपीओ व सुपरवाईजरों की विशेष प्रशिक्षण कराये जाने के लिए जिला कार्यक्रम अधिकारी को निर्देशित किया है। उन्होंने कहा कि जहां-जहां टीएचआर के वितरण में कोई समस्या आ रही हो, उसका निराकरण कराते हुए वितरण करायें। बैठक में जिलाधिकारी ने आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को पोषण टैकर एप पर फीडिंग करने के लिए प्रशिक्षित किए जाने एवं उनके द्वारा फीडिंग की सुपरवाइजर के माध्यम से क्रास चेकिंग कराये जाने के लिए कहा है। उन्होंने कहा कि यदि फीडिंग में कहीं अंतर पाया जाये, तो सम्बंधित के विरूद्ध कार्रवाई सुनिश्चित की जाये। बैठक में जिलाधिकारी ने सभी सीडीपीओ को प्रस्ताव समय से भेजे जाने, बीएचएनडी की टेनिंग अवश्य कराये जाने व पोषण टैकर एप पर 100 प्रतिशत फीडिंग सुनिश्चित करने के साथ फीडिंग की रैण्डमली जांच कराये जाने के निर्देश दिए है। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी गौरव कुमार, सीएमओ डॉ0 आशु पाण्डेय, जिला विकास अधिकारी भोलानाथ कनौजिया, परियोजना निदेशक अशोक कुमार मौर्या, जिला कार्यक्रम अधिकारी दिनेश सिंह, डीपीआरओ, बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रवीण तिवारी सहित अन्य सम्बंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

इलाहाबाद हाई कोर्ट संगठन की बैठक में जमकर हंगामा, लाइब्रेरी हाल में बुलाई गई थी मीटिंग

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन की बृहस्पतिवार को हुई आमसभा में जमकर हंगामा हुआ। एसोसिएशन ने विभिन्न मुद्दों को लेकर आमसभा बुलाई थी। इसमें वकीलों के बीच आम सहमति न बन पाने के कारण हंगामा शुरू हो गया और स्थिति मारपीट तक पहुंच गई। अधिवक्ताओं ने किसी तरह से मामले को संभाला। हाईकोर्ट बार एसोसिएशन की मौजूदा कार्यकारिणी का कार्यकाल 23 जनवरी को खत्म हो रहा है। बार एसोसिएशन की वार्षिक आमसभा बृहस्पतिवार को आहूत की गई, जिसमे वार्षिक बजट पेश किए जाने के साथ ही नए चुनाव की घोषणा पर चर्चा की जानी थी। इसके पहल ही हंगामा शुरू हो गया।

ट्रान्सपोर्ट नगर एवं अल्लापुर में गृहकर बकाया, लैक्सो फैक्ट्री तथा भवन पर सीलिंग की कार्यवाही

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। नगर आयुक्त नगर निगम, प्रयागराज के निदेर्शानुक्रम में गृहकर वसूली के सम्बन्ध में मुख्य कर निर्धारण अधिकारी पी0के0द्विवेदी द्वारा निरन्तर समीक्षा की जा रही है। इसी क्रम में सभी जोनल कार्यालयों में जोनल कर अधीक्षकों द्वारा अभियान में सख्ती दिखाते हुए कई बडे. बकायेदारों/भवन स्वामियों के भवन पर कुर्की की कार्यवाही नियमित रूप से किया जा रहा है। इसी क्रम में आज दिनांक 18 जनवरी 2024 को जोनल कार्यालय जोन 06 ट्रान्सपोर्ट नगर स्थित भवन 34बी/66 चक मुण्डेरा प्रयागराज पर गृहकर के रूप में रू0-6,46,333.00 बकाया पर सीलिंग की कार्यवाही की गयी। जोनल कार्यालय 4 अल्लापुर के वार्ड 16 न्यू लश्कर लाइन में गृहकर की बकाया धनराशि रू0-92,686.00 पर सीलिंग की कार्यवाही की गयी तथा भवन सख्या 627/70/बी, सोहबतिया बाग में गृहकर धनराशि रू0-1,14,700.00 पर बकाया धनराशि भुगतान न करने की स्थिति में कर अधीक्षक एवं वसूली टीम द्वारा भवन को सीज करने की कार्यवाही की गयी। सभी जोनल कार्यालयों में बडे. बकायेदारों के खिलाफ सीलिंग/कुर्की की कार्यवाही के दौरान वसूली टीम द्वारा प्राप्त कुल धनराशि रू0-42.79 लाख की गृहकर वसूलयावी की गयी। जोनल कार्यालय ट्रान्सपोर्ट नगर तथा अल्लापुर में आज गृहकर के बडे बकायेदारों के खिलाफ वसूली अभियान मुख्य कर निर्धारण अधिकारी के नेतृत्व में संचालित किया गया इस दौरान राजस्व निरीक्षक झम्मन सिंह, राजस्व निरीक्षक राकेश कुमार, राजस्व निरीक्षक निलिमा द्विवेदी एवं नगर निगम प्रर्वतन दल के सदस्य कार्यवाही में शामिल रहे।

यूथ कांग्रेस के नवनियुक्त पदाधिकारियों का हुआ स्वागत सम्मान समारोह

एनएसयूआई के राष्ट्रीय संयोजक रहे जितेश कुमार मिश्रा उत्तर प्रदेश युवा कांग्रेस के उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए

प्रयागराज। गुरूवार को प्रयागराज ज़िला कांग्रेस कमेटी कार्यालय में उत्तर प्रदेश युवा कांग्रेस के नवनियुक्त पदाधिकारियों का स्वागत सम्मान समारोह आयोजित किया गया। नवनियुक्त पदाधिकारियों जिनका स्वागत समारोह हुआ उनमें मुख्यत उत्तर प्रदेश यूथ कांग्रेस के प्रदेश उपाध्यक्ष पंडित जितेश कुमार मिश्रा मिर्जापुर ज़िला सचिव विमलेन्द्र कुमार शुक्ला नान्हक विधानसभा छानबे प्रांशु मिश्रा जिला उपाध्यक्ष प्रयागराज विक्रम सिंह पटेल प्रदेश महासचिव यूपी यूथ कांग्रेस प्रदीप पांडेय, आदर्श प्रजापति, मनोज सिंह पटेल, प्रदेश सचिव सरफराज खान बलवंत सिंह राव अजीत पासी विधानसभा अध्यक्ष प्रतापपुर अमित पांडेय फूलपुर राजू यादव सोराव सचिन पासी शहर दक्षिण बहन तमन्ना शहर उत्तरी रोहित कुशवाहा कोराव संजय पटेल महासचिव यूपी यूथ कांग्रेस नरेंद्र आदिवासी विधानसभा मेजा अध्यक्ष सूर्य प्रकाश पटेल बारा विधानसभा अध्यक्ष राम सागर कोल सहित कई दर्जनों पदाधिकारी रहे । यूथ कांग्रेस के सभी नव निर्वाचित पदाधिकारी स्वागत करने वालो में ज़िला अध्यक्ष सुरेश चंद्र यादव जो कार्यक्रम की अध्यक्षता किए, प्रदेश महासचिव यूपी कांग्रेस मुकुंद तिवारी, इवीवी के अध्यक्ष रहे पीसीसी सदस्य संजय तिवारी, ज़िला प्रवक्ता हसीब अहमद, पीसीसी सदस्य मनोज पासी, ओबीसी महासचिव लाल सिंह पटेल, राकेश पटेल, बजरंग लाल, शीश अहमद, मोहम्मद तालिब, सुनील यादव, परवीन बानो, भानु प्रकाश, मयंक आदि रहे। कार्यक्रम का संचालन रईस अहमद एडवोकेट ने किया और धन्यवाद ज्ञापन अंकुर पांडे ने किया।

मदद फाउंडेशन' ने अरविंद पाण्डेय को दी जिलाध्यक्ष प्रयागराज की जिम्मेदारी

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। संपूर्ण भारत में कार्य कर रही सामाजिक संस्था 'मदद फाउंडेशन' की एक बैठक बुधवार को झूंसी स्थित राष्ट्रीय कार्यालय में आयोजित की गई जिसमें मदद फाउंडेशन के कई कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में संस्थापक एवम राष्ट्रीय अध्यक्ष मंगल प्रसाद तिवारी ने संस्था द्वारा चलाए जा रहे अभियान सर्दी के सिपाही' की तैयारियों के बारे में योजना बनाई और आम जनमानस द्वारा मिल रहे सहयोग के लिए आभार प्रकट किया।

अध्यक्ष मंगला प्रसाद तिवारी ने कहा कि हमारे इस अभियान से अब तक 500 से ज्यादा गरीब जरूरतमंद परिवारों को कंबल प्राप्त हो चुका है। आगे भी यह क्रम जारी रहेगा। संस्था के प्रदेश उपाध्यक्ष कुशलेश दूबे ने अपने संबोधन में कहा कि आप सभी की अपनी संस्था मदद फाउंडेशन लगातार दीन, हीन, दुखियों, एवं जरूरतमंदों के बीच प्रत्येक रविवार कंबल , कपड़े, स्वेटर, जैकेट, जूते चप्पल और भोजन एवं पानी वितरित कर रही है जिससे जो सच में जरूरतमंद लोग हैं उनकी मदद हो रही है, हमारे इस कार्य से महीने में लगभग 500 जरूरतमंद परिवार लाभान्वित हो रहे हैं। आगे उन्होंने कहा कि मदद फाउंडेशन का एक-एक सदस्य और पदाधिकारी लोगों से आवाहन शुरू कर दे कि वह अपने पुराने कपड़े, स्वेटर, जैकेट, जूते, चप्पल इत्यादि हमें दे जिससे हम उसे जरूरतमंद परिवारों और व्यक्तियों तक पहुंच सके। गौरतलब है कि इस बैठक में संस्थापक एवम राष्ट्रीय अध्यक्ष मंगला प्रसाद तिवारी, राष्ट्रीय महासचिव अमृता तिवारी, राष्ट्रीय सचिव विजय मिश्रा, संतोष शुक्ला, ब्लॉक अध्यक्ष आदर्श पाठक, अखिलेश पांडेय, राहुल दूबे व अन्य पदाधिकारी एवं सदस्यों की संस्तुति से प्रयागराज निवासी अरविंद पाण्डेय पुत्र अशोक पाण्डेय को ज़िलाध्यक्ष प्रयागराज मनोनीत किया गया। इस दौरान सभी सदस्यों एवं पदाधिकारी ने अरविंद पाण्डेय को अपनी शुभकामनाएं दी।

अलाव तापने के दौरान मकान में लगी आग

नैनी। नैनी क्षेत्र के चकरघुनाथ चैम्पियन गली में गुरुवार को अलाव तापने के दौरान मकान के तीसरे मंजिल में आग लगने से हड़कंप मच गया। स्थानीय दुकानदारों ने काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। चैम्पियन गली में रहने वाले संदीप केसरवानी की आरती साड़ी सेंटर के नाम से दुकान है। दुकान के ऊपरी हिस्से में संदीप का परिवार रहता है। दोपहर को तीसरी मंजिल पर संदीप के बच्चे ठंड से बचने के लिए अलाव जलाए हुए थे, जबकि नीचे दुकान पर संदीप थे। ऊपरी हिस्से से अचानक धुआं उठने लगा। बच्चों ने फौरन नीचे आकर परीजनों को जानकारी दी। तब तक अग बढ़ चुकी थी। आसपास के दुकानदारों की मदद से आग पर काबू पा लिया गया। दुकानदार के मुताबिक अग से हजारों का नुकसान हुआ है।

नैनी पुलिस द्वारा अभियुक्त गिरफ्तार, कब्जे से 04 अवैध देशी बम बरामद

नैनी। नैनी कोतवाली प्रभारी निरीक्षक थाना नैनी यश पाल सिंह के निर्देशन में अमित कुमार सिंह चौकी प्रभारी छिवकी थाना नैनी पुलिस द्वारा गुरुवार को मुखबिर की सूचना पर अभियुक्त त्रिवेणी प्रसाद पुत्र बटोही रामनिवासी 195 जेल रोड चकरघुनाथ थाना नैनी वर्तमान पता स्वरूप आश्रम के बगल विनोवा नगर थाना नैनी को टी0एस0एल0 गेट के पास थाना क्षेत्र नैनी से गिरफ्तार कर, कब्जे से 04 अवैध देशी बम बरामद किये गये। उक्त गिरफ्तारी बरामदगी के संबंध में थाना नैनी में विभिन्न धाराओं में पंजीकृत किया गया।

नैनी पुराने पुल के नीचे की सड़क में गड्ढे ही गड्ढे

पुल के ऊपर उल्टे साइड लोग चले जाते हैं कभी भी हो सकता है बड़ा हादसा

अखंड भारत संदेश

नैनी। नैनी पुराने यमुना पुल के ऊपर से शहर की तरफ जाने के लिए जब से रास्ता बंद हुआ है पुल के नीचे का आवागमन बढ़ गया है पुल के नीचे की सड़क पर गड्ढे ही गड्ढे हैं खास बात यह है कि रात में लोग जाने से घबराते हैं क्योंकि कुछ दूरी पर लाइट नहीं है वहां पर और अब यह हाल है पुल के नीचे पाइप लाइन में लीकेज से सड़क पर जलभराव हो गया। सड़क पर गड्ढा होने से कई वाहन उसमे पलट गए। इससे कई लोग चुटहिल हो गए। यीशु दरबार के समीप यमुना पुन के नीचे पाइप लाइन में लीकेज के कारण जलभराव हो गया। इससे पिछले कई दिनों से लोगों को आवागमन में दिक्कत उठानी पड़ रही है। सड़क पर पानी भरा होने के कारण चालकों को गड्ढे का अंदाजा नहीं हो पाता। अब तक कई तिपहिया वाहन उसमें पलट चुके हैं। पुराने पुल पर जब से वनवे व्यवस्था की गई है, तब से बाईपास का उपयोग काफी अधिक होने लगा है। इसी कारण इस मार्ग पर बड़ी संख्या में वाहन गुजरते हैं। लोगों को जलभराव से आवागमन में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

श्रीराम चरण पादुका यात्रा का बेल्हा पहुंचने पर उत्सव जैसा माहौल

श्रीराम चरण पादुका यात्रा का स्वागत करते सांसद, डीएम व एसपी।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। श्रीराम चरण पादुका यात्रा के बेल्हा पहुंचने पर उत्सव जैसा माहौल रहा। शहर में जगह-जगह इस यात्रा पर पुष्प वर्षा हो रही थी तो सैकड़ों राम भक्त ढोल नगाडे.पर राम धुन पर नाच रहे थे। जगह-जगह आतिशबाजी से पूरा शहर भक्ति की धारा में डूबा नजर आया। पूरा शहर राम ध्वज व

जगह-जगह पुष्पवर्षा, ढोल नगाडे.व आतिशबाजी से हुआ स्वागत

स्वागत होर्डिंग से पटा हुआ था।

श्रीराम चरण पादुका यात्रा का शहर में प्रवेश होते ही सड़कों पर अपार जनसमुदाय उमड़ पड़ा। पुलिस ने वाहनों के चलने पर सुबह से ही रोक लगा दी थी फिर भी अपार भीड़ से यात्रा भी धीरे-धीरे आगे बढ़ पा रही थी। इस बारे में लोगों का कहना था कि भीड़ शहर के ऐतिहासिक भरत मिलाप से भीज्यादा दिखाई दे रही थी। इस श्रीराम चरण पादुका यात्रा का प्रदेश के पूर्व मंत्री मोती सिंह, राष्ट्रीय स्वयं सेवक के बौद्धिक प्रमुख सौरभ पाण्डेय, नगर पालिकाध्यक्ष हरिप्रताप सिंह, विनोद पाण्डेय, प्रभाशंकर पाण्डेय आदि ने शहर में यात्रा का स्वागत किया। प्रतापगढ़ के सांसद संगम लाल गुप्ता व आरएसएस नेता सौरभ पाण्डेय ने प्रतापगढ़ सीमा पर स्वागत किया। चैक घंटाघर पहुंचने पर सांसद संगम लाल गुप्ता, जिलाधिकारी संजीव रंजन व एसपी सतपाल अंतिल ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच चैक घंटाघर से गुजरी श्रीराम चरण पादुका यात्रा का चिलबिला में भी स्वागत किया गया। मकर संक्रांति से चित्रकूट से शुरू हुई यह श्रीराम चरण पादुका यात्रा 19 जनवरी को अयोध्या पहुंचेगी।

चरण पादुका की चिलबिला हनुमान मंदिर पर भक्तों ने किया पूजन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मंदिर के महासचिव रोशनलाल उमरवैश्य ने माता सीता के चरण पादुका पर माल्यार्पण कर पूजन अर्चन कर सभी भक्तों के कल्याण के लिए आशीर्वाद मांगा। मंदिर समिति के हनुमान भक्तों को जानकारी मिली थी की माता सीता की चरण पादुका श्रीलंका के अशोक वाटिका से चलकर अयोध्या जा रही है सैकड़ो की संख्या में हनुमान भक्त माता सीता की चरण पादुका का पूजन करने के लिए हनुमान मंदिर पर पहुंच गए। सभी भक्तो ने माता सीता की चरण पादुका का पूजन अर्चन किया। रोशनलाल उमरवैश्य ने बताया कि 8 जनवरी को प्रतापगढ़ आ रही प्रभु श्री राम की चरण पादुका का स्वागत व पूजन हनुमान भक्त श्री हनुमान मंदिर पर करेंगे। पूजन अर्चन करने वालों में बजरंग लाल, सूरज कुमार, श्याम बाबू, शनि महाराज, सोनू महाराज, आदर्श कुमार, संतोष कुमार, छेदीलाल, देवानंद, सुरेश अग्रवाल, रामगोपाल, गोलू ,आशीष लाइट, विवेक कुमार,अशोक उमरवैश्य,प्रभात कुमार आदि भक्तगण उपस्थित रहे।

राम भक्तों ने चरण पादुका यात्रा का गर्मजोशी से किया स्वागत

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। श्री राम जन्मभूमि प्राण प्रतिष्ठा संपर्क अभियान समिति प्रतापगढ़ के संयोजकत्व में श्री राम चरण पादुका यात्रा के प्रतापगढ़ की सीमा पर पहुंचने पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ,विश्व हिंदू परिषद, एकल विद्यालय एवं विचार परिवार के कार्यकताओं ने भव्य स्वागत किया। पुष्प वर्षा एवं जय श्री राम के उद्घोष के साथ शंखध्वनि करते हुए वैदिक मंत्र उच्चारण द्वारा पुष्प वर्षा कर भव्य स्वागत किया गया। स्वागत के इसी क्रम में विश्वनाथगंज शनि देव धाम के ठीक सामने स्थानीय समाज के व्यक्तियों एवं आम जनमानस तथा विचार परिवार के कार्यकताओं द्वारा भव्य स्वागत किया गया। स्वागत के इसी क्रम में यात्रा राजगढ़ होते हुए भूपिया मऊ में भी कार्यकताओं ने जय श्री राम के उद्घोष के साथ सड़क के किनारे खड़े होकर स्वागत किया। इसी प्रकार सीताराम धाम होते हुए भगवा चुंगी पर भी राम भक्तों का जन सैलाब सड़कों पर आकर भक्ति रूपी आस्था के ज्वार में खड़ा दिखाई दिया। इस दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रतापगढ़ विभाग के विभाग प्रचार प्रमुख एवं श्री राम जन्मभूमि प्राण प्रतिष्ठा संपर्क अभियान समिति प्रतापगढ़ के जिला सहसंयोजक प्रभा शंकर पांडेय एवं विश्व हिंदू परिषद के जिला मंत्री तथा अभियान के जिला संयोजक राजन, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला प्रचारक शिव प्रसाद, जिला कार्यवाह हेमंत कुमार, जिला सहसंयोजक शिव शंकर सिंह, विश्व हिंदू परिषद के विभाग मंत्री रजनीश, जिला संगठन मंत्री ,चंदन, महेश गुप्ता, शिवेश शुक्ला, विवेक कुमार, प्रभात कुमार, अवधेश कुमार मिश्रा, अनामिका उपाध्याय, सारिका श्रीवास्तव ,छाया, राम उजागर, जिला प्रचार प्रमुख अंकुर श्रीवास्तव, अशोक शर्मा, राजा, शिवकुमार सोनी, सीतांशु, अजय कुमार पांडे, पंकज कुमार आदि अनेक राम भक्त उपस्थित रहे।

जनविरोधी नीतियों के खिलाफ संघर्ष का बिगुल है भारत जोड़ो न्याय यात्रा: प्रमोद तिवारी

राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता ने असफलताओं पर की मोदी सरकार की घेराबंदी

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने गुरूवार को रामपुर खास विधानसभा क्षेत्र में एक दिवसीय दौरे के तहत पार्टी कार्यकताओं व क्षेत्रीय लोगों से मुलाकात कर क्षेत्र में जारी विकास योजनाओं के संचालन में सहयोग मांगा।

लालगंज स्थित कैम्प कार्यालय पर विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने कार्यकताओं से रूबरू होते हुए कांग्रेस की राहुल गांधी की अगुवाई में भारत जोड़ो न्याय यात्रा देश की जनता को उसके अधिकार व उसके हक को दिलाये जाने के लिए मजबूती से जारी रहेगी। उन्होनें कहा कि मोदी सरकार युवाओं के सामने सबसे बडी बेरोजगारी तथा किसानों

पूर्व प्रधान की मां के निधन पर संवेदना प्रकट करते राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी।

व मजदूरों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के साथ महिलाओं की सुरक्षा में विफलता से जनता का ध्यान हटाने के लिए गैरजरूरी हथकण्डे अपना रही है। उन्होने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था दिनों दिन बेपटरी होती जा रही है। इसके बावजूद बकौल प्रमोद तिवारी केन्द्र की मोदी सरकार अर्थव्यवस्था के बिगड़ते सूचकांक की विफलता से मुंह मोड़े हुए है।

इसके पूर्व राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने अलावलपुर में पूर्व प्रधान राजपत सिंह की मां के आकस्मिक निधन पर परिजनों से मुलाकात कर संवेदना जतायी। वह बाबा घुइसरनाथ धाम पहुंचे और यहां दर्शन पूजन कर बाबा धाम में चल रहे विकास कार्यो का भी अवलोकन किया। बाबा धाम में श्रद्धालुओं ने सांसद प्रमोद तिवारी से मिलकर हाल ही में विधायक आराधना मिश्रा मोना तथा उनके प्रयास से यहां रीवर फ्रन्ट के लिए दो करोड से अधिक की धनराशि मंजूर कराये जाने के लिए खुशी भी जतायी। इस मौके पर प्रतिनिधि भगवती प्रसाद तिवारी, सांगीपुर प्रमुख अशोक सिंह बब्लू, आशीष उपाध्याय, चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी, छोटे लाल सरोज, पप्पू तिवारी, प्रधान रोहित सिंह, अशोकधर द्विवेदी आदि रहे।

पढ़ाई कराने के नाम पर पीड़ित से ऐंठ लिये दस लाख रुपए, केस दर्ज

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। मर्चेण्ट नेवी की पढ़ाई कराने के नाम पर आरोपियों ने पीडित से दस लाख रुपए ऐंठ लिया। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने दो लोगों के खिलाफ बुधवार की रात धोखाधड़ी का मुकदमा दर्ज किया है। उदयपुर थाना के बेवली निवासी शुभम सिंह पुत्र ललित सिंह ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि लालगंज कोतवाली के रानीगंज कैथौला में स्थित भारतीय स्टेट बैंक की शाखा में उनकी मां सुधा सिंह का खाता है। पीडित का आरोप है कि प्रयागराज जिले के कोटवा सराय इनायत निवासी नितेश कुमार यादव उर्फ गुडडू पुत्र सुशील यादव तथा सनी यादव ने मर्चेण्ट नेवी की पढाई करवाने के नाम पर धोखाधड़ी करते हुए उससे दस लाख रुपए की मांग की। झांसे में आकर पीड़ित ने अपनी मां के खाते से आरोपियों के खाते में दस लाख रुपए हस्तांतरित कर दिया।

बेल्हा के प्रबुद्धजनों ने डॉ. शाहिदा को समाज गौरव सम्मान से नवाजा

उत्कृष्ट योगदान के लिये केन्द्रीय रक्षामंत्री से सम्मानित डॉ. शाहिदा का हुआ सम्मान

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सृजना साहित्यिक संस्था उत्तर प्रदेश, अम्मा साहेब ट्रस्ट द्वारा संयुक्त रूप से सुविज्ञ साहित्यकार, समर्पित शिक्षाविद व उत्कट समाजसेवी डॉ. शाहिदा को उनके उल्लेखनीय योगदान हेतु केन्द्रीय रक्षामंत्री मंत्री राजनाथ सिंह द्वारा सम्मानित किये जाने पर माता गंगा देवी स्मृति समाज गौरव सम्मान से शारदा संगीत महाविद्यालय में नवाजा गया।

गौरतलब है कि केन्द्रीय रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने लखनऊ के अटल बिहारी वाजपेई कन्वेंशन सेंटर में एक भव्य समारोह में डॉ. शाहिदा को स्मृति चिन्ह व सम्मान पत्र भेंट कर सम्मानित किया। इस बड़ी उपलब्धि पर डॉ. शाहिदा का गुणगान करते हुए पूर्व बाल

शारदा संगीत महाविद्यालय में डा0 शाहिदा को सम्मानित करते प्रबुद्धजन।

न्यायाधीश व वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. दयाराम मौर्य रत्न ने कहा डॉ. शाहिदा समाज के लिए अनुकरणीय उदाहरण हैं। बेल्हा के बहुमुखी उत्थान में उनका प्रमुख योगदान है। उनके सम्मान से प्रतापगढ़ का मान बढ़ा है। अम्मा साहेब ट्रस्ट के ट्रस्टी व स्वस्थ समाज के सृजक आनन्द मोहन ओझा ने कहा कि डॉ0 शाहिदा सदा कर्म में विश्वास करती हैं। उन्होंने संघर्ष कर बुलंदी पाई है। सम्मान करने वालों में प्राचार्य बीना श्रीवास्तव, अशोक कुमार तिवारी, राम प्रकाश तिवारी, कुसुम लता श्रीवास्तव, रीना सिंह, प्रतीक्षा पाल तथा रोहित प्रमुख रहे।

शराब दुकान के सेल्समैन को तमंचा सटाकर तेईस हजार आठ सौ की लूट

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। शराब दुकान के सेल्समैन को तमंचा सटाकर बदमाश तेईस हजार आठ सौ रुपए लूटकर भाग निकले। बदमाश नकदी के साथ ही डीवीआर मशीन व तीन पेटी देशी शराब भी उठा ले गये। घटना को लेकर पीड़ित ने सांगीपुर पुलिस को तहरीर दी है। सांगीपुर थानान्तर्गत देउम में रामकृपाल मिश्र व राजेश मिश्र देशी शराब की दुकान संचालित करते हैं। इस दुकान पर तेज प्रताप सिंह पुत्र पंचम सिंह निवासी मंगापुर उदयपुर सेल्समैन के रूप में कार्य करते हैं। पीडित सेल्समैन के अनुसार बुधवार की रात करीब साढे नौ बजे वह दुकान बंद कर रहा था। इसी बीच बाइक से दो अज्ञात बदमाश पीछे से पहुंचे और पीडित की कनपटी पर तमंचा सटा दिया। आरोप है कि बदमाश पीड़ित से कैश बाक्स की चाबी लेकर उसमें शराब बिक्री कर रखा तेईस हजार आठ सौ रुपए लूट लिया। यही नही बदमाशों ने सीसी टीवी कैमरा की डीवीआर मशीन व तीन पेटी शराब भी उठा ले गये। बदमाश पीडित को कहीं शिकायत पर जान से मारने की धमकी देते भाग निकले।

पूर्व मंत्री ने कार्यकताओं संग पट्टी पावर हाउस स्थित शिव मंदिर में लगाई झाड़ू

पूर्व मंत्री ने पट्टी नगर में किया अक्षत वितरण

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। 22 जनवरी को अयोध्या में भगवान को भगवान पुरुषोत्तम श्री राम की प्राण प्रतिष्ठा और मंदिर के शुभारंभ से ठीक पहले शासन के निर्देश पर पूरे देश में सभी धार्मिक स्थलों, सार्वजनिक स्थलों और मंदिरों में साफ सफाई अभियान चलाया जा रहा है, जिसको लेकर पट्टी नगर स्थित पावर हाउस में शिव मंदिर पर पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेंद्र प्रताप सिंह मोदी सिंह के साथ झाड़ू लगाई और जय श्री राम का नारा लगाकर मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा का स्वागत किया।

इस अवसर पर मुख्य रूप से पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेंद्र प्रताप सिंह मोती सिंह,पट्टी ब्लॉक प्रमुख राकेश कुमार सिंह और पप्पू सिंह नगर पंचायत पट्टी अध्यक्ष अशोक जायसवाल, भाजपा जिला

शिव मंदिर में झाड़ू लगाते पूर्व मंत्री मोती सिंह।

उपाध्यक्ष अशोक श्रीवास्तव, शिवकुमार चैरसिया, पूरे जिला पंचायत सदस्य राजू सिंह, एसडीओ एसवी प्रसाद, जेई जय राजपूत, पट्टी कोतवाल अर्जुन सिंह, मीडिया प्रभारी विनोद पांडेय,नगर पंचायत रामगंज अध्यक्ष राकेश सिंह,पवन खंडेलवाल, प्रमोद खंडेलवाल, अमित जायसवाल, डाक्टर के. एल विश्वकर्मा, राजा अर्जुन सिंह, नेता अब्बास अली, पूर्व नगर पंचायत पट्टी अध्यक्ष रामचरित्र वर्मा, शैलेश सिंह, गंगाराम, सजीवन सोनी, रमेश चंद सोनी, प्रिंस बरनवाल, सहित सैकड़ों लोग उपस्थित रहे। उधर भगवान पुरुषोत्तम श्री राम की जयघोष के साथ जहां पूरे देश में राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा को लेकर लोग प्रसन्नता जाहिर कर रहे हैं वही उसमें सहयोग करने के लिए पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेंद्र प्रताप सिंह मोती सिंह ने पट्टी नगर में अक्षत वितरण करते हुए समर्थकों के साथ सभी को कार्यक्रम हिस्सा लेते हुए दीप जलाने और खुशियां मनाने की अपील की।

श्रद्धा के साथ मनाया गया गुरु गोविन्द सिंह का 357वां प्रकाश पर्व

गतका पार्टी ने मार्शल आर्ट दिखाया, निकाली गई शोभा यात्रा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। गुरु गोबिंद सिंह का 357वां प्रकाश पर्व बड़े धूम धाम व श्रद्धा के साथ गुरुद्वारा गुरू नानक शाही बाबागंज में मनाया गया, जिसकी सभी तैयारिया पूरी कर ली गई थी। प्रातः 9.00 बजे श्री अखण्ड पाठ साहिब जी का समापन हुआ। 9.30 बजे से कीर्तन दरबार शुरू हुआ, जिसमे सबसे पहले हजूरी रागी भाई भाई हरविंदर सिंह सिंह, इसके बाद भाई विपिन प्रीत सिंह, 11 बजे से बीबी मंजीत कौर कीर्तन किया, 11.30 बजे से 12.30 बजे तक बच्चे शब्द कीर्तन गायन किया।

एक बजे से बाहर से पधारे भाईसतबीर सिंह अपने जत्थे के साथ कीर्तन एवम गुरु इतिहास वर्णन किया। 230 बजे तत्पश्चात नगर पालिकाध्यक्ष हरिप्रताप सिंह ने संगतों को संबोधित किया। तीन बजे उपाध्यक्ष मंजीत सिंह गोबिंद ने गुरु

नगर में निकाली गई शोभा यात्रा।

इतिहास बताया व सभी का धन्यवाद किया। अरदास उपरांत गुरु के अटूट लंगर सभी एक पात में बैठ कर ग्रहण किया। 3.30 बजे से एक भव्य नगर कीर्तन (शोभा यात्रा) जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सरपरस्ती में व पंच प्यारो के नेतृत्व में हाथी घोड़े, बैंड बाजे, डीजे, महिलाओं व पुरुषो के कीर्तनीय जत्थे गुरुजस, शब्द कीर्तन करते ब जोबोले सो निहाल सतश्री अकाल के जय कारे लगाते हुए नगर को भक्तिमय करते हुए निकला शोभा यात्रा में मुख्य आकर्षण गतका पार्टी जो अपने करतब (मार्शल आर्ट) दिखाते हुए चल रहे थे अंत में फूलों से सजे रथ में श्री गुरु ग्रंथ साहिब शोभायमान हुए, शोभा यात्रा में गुरमात ज्ञान प्रतियोगिता की कड़ी में कई लोगो से प्रश्न किया गया जिन्होंने ने सही जवाब दिया उन्हें गिफ्ट ब प्रमाण पत्र भी दिया गया शोभायात्रा गुरुद्वारा गुरू नानक शाहीबाबागंज से चल कर निर्मल पैलेस तिराहा चैक घंटाघर पर पहुंच कर गतका पार्टी (मार्शल आर्ट) कला कौशल एक घंटा स्टेज शो किया। उसके बाद श्रीराम तिराहा, राजा पाल टंकी होते हुए रात्रि 8 बजे पंजाबी कालोनी गुरुद्वारा सिंह सभा पर समापन हुआ। इस अवसर पर सभी सिक्ख भाईयो के प्रतिष्ठान बंद रहे। शोभा यात्रा में प्रमुख रूप से मंजीत सिंह छाबड़ा, मंजीत सिंह गोबिंद, करम जीत सिंह, सुरजीत सिंह, रविन्द्र सिंह, रिंकू जी, सोनू सरब जीत सिंह, परम प्रीत सिंह, जगमीत सिंह, गुरप्रीत सिंह, हरप्रीत सिंह आदि मौजूद रहे। उक्त जानकारी सरदार मंजीत सिंह गोबिंद ने दी।

खुले में शौच मुक्त के बाद भी जीवंत है लोटे की परंपरा

शौचालय निर्माण में हो गए करोड़ों खर्च, फिर भी नही बदली गावों की सूरत

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। प्रशासन के खुले में शौच मुक्त के दावे के बाद आज भी गावों में लोटे की परंपरा जीवंत है। भ्रष्टाचार की भेंट की वजह से शौचालयों का निर्माण कार्य गुणवत्ता विहीन होने के कारण शासन की मंशा को अधिकारियों ने धराशायी कर दिया। यही मुख्य वजह है कि खुले में शौच जाना गांव के लोगों की मजबूरी है।

स्थानीय विकास खंड में कुल 57 ग्राम पंचायतें हैं। स्वच्छता तथा सफाई के उद्देश्य से उक्त गावों में लगभग पच्चीस हजार शौचालयों के साथ ही लगभग हर गांव में सामुदायिक शौचालयों का भी निर्माण कार्य कराया गया है।एक शौचालय पर बारह हजार की धनराशि खर्च

अधूरा पड़ा शौचालय।

की गई। भ्रष्टाचार की वजह से करोड़ों खर्च पर पानी फिर गया और गावों की सूरत आज भी जस की तस ही नजर आती है।

हर गांव स्वच्छ और साफ रहे सरकार की इस मनसूबे पर भ्रष्टाचार की नजर लग गई। शौचालय निर्माण के लिए कहीं लाभार्थियों को 12 हजार मिले तो कही सीमेट, ईट व मौरंग से ही संतोष करना पड़ा। कहीं-कहीं तो प्रतिनिधियों ने शौचालयों को बनवाया।

अब इस दशा में कही शौचालयों को छत तो कही गड्ढा नसीब नहीं हुआ। वहीं वाह-वाही लूटते हुए अधिकारियों ने गॉवो को ओडीएफ तो घोषित कर दिया लेकिन यह ओडीएफ धरातल पर कही भी नजर नहीं आता है। गांव के लोग आज भी खुले में शौच जाने के लिए मजबूर है। ग्रामीणों ने बताया कि यदि शौचालयों के लिए निर्धारित 12 हजार की पूरी धनराशि ईमानदारी के साथ खर्च की गई होती तो गांव के लोगो को लोटे की परंपरा से मुक्ति मिल जाती। इस संबंध में एडीओ पंचायत से बात करने का प्रयास किया गया लेकिन मोबाइल बंद होने के कारण बात नही हो सकी।

अन्तर्राष्ट्रीय होम्योपैथिक कांफ्रेंस का आयोजन 10 फरवरी से

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। रिसर्च सोसाइटी ऑफ होमियोपैथी द्वारा 10 व 11 फरवरी 2024 को लखनऊ में पहली बार तीसरी अन्तर्राष्ट्रीय होम्योपैथिक कांफ्रेंस 2024 का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें देश-विदेश के लगभग 2000 से अधिक होम्योपैथिक विशेषज्ञ, छात्र हिस्सा लेंगे। उक्त जानकारी आज यहां होमियोपैथी विशेषज्ञ व कांफ्रेंस की आयोजन समिति के सदस्य डा0वी0के0सिंह ने दी है। डा0 सिंह ने बताया कि अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस का आयोजन पहली बार लखनऊ की धरती पर हो रहा है। आयोजन लाल बहादुर शास्त्री किसान गन्ना संस्थान, डालीबाग, लखनऊ में होगा। कांफ्रेंस में अंतरराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक शोध पत्र प्रस्तुत किये जायेंगे। प्रमुख रूप से फिलीपीन्स के डा0 शाजी कुडियत, ग्रीस के डा0जार्ज विथालकस, पाकिस्तान के डा0 जावेद अख्तर, कलकत्ता के डा0 सुभाष सिंह, हैदराबाद के डा0 एस0प्रवीण कुमार, आगरा के डा0प्रदीप गुप्ता, पुणे के डा0धर्मेंद्र चक, जयपुर के डा0 शिशिर माथुर सहित अनेक चिकित्सा विषेशज्ञ अपने शोध पत्र प्रस्तुत करेंगे। डा0 वी0के0सिंह ने बताया कि जो भी चिकित्सक/छात्र कॉन्फ्रेंस में शामिल होने के इच्छुक हैं, वे मुझसे संपर्क कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि कॉन्फ्रेंस स्थल पर एक प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी और एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जाएगा। उन्होंने बताया कि कॉन्फ्रेंस को भव्यता प्रदान करने के लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है।

लीला पैलेस में आयोजित हुआ संस्कृति उत्सव

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के क्रम में जिला प्रशासन द्वारा आयोजित एवं संस्कार भारती, प्रतापगढ़ के संयोजन में संस्कृति उत्सव का भव्य आयोजन नगर स्थित लीला पैलेस में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सांसद संगम लाल गुप्ता, उद्घाटन अतिथि शिव प्रकाश मिश्र सेनानी, अति विशिष्ट अतिथि पूर्व जिलाध्यक्ष भाजपा हरिओम मिश्र, बडौदा यूपी बैंक के क्षेत्रीय प्रबंधक आर एल बुनकर एवं उप क्षेत्रीय प्रबंधक डी एस पांडे तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग बौद्धिक शिक्षण प्रमुख डॉ. सौरभ पांडेय, समापन अतिथि जिला विकास अधिकारी राकेश प्रसाद रहे। संचालन शिशिर खरे अध्यक्ष संस्कार भारती और आभार अनूप उपाध्याय अनुपम सचिव ने किया। कार्यक्रम में संगीत के विभिन्न विधाओं के संगीत कलाकारों ने प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में गिरजा शंकर मिश्र, डॉ पीयूषकांत शर्मा, रुचि के सरवानी, डाली के सरवानी, मालिनी के सरवानी और श्रद्धा के सरवानी सारिका श्रीवास्तव, लक्ष्मी मिश्रा, राजेश मिश्रा, सुप्रसिद्ध गायक डा. बच्चा जी, अपूर्व चटर्जी आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में प्रतिभाग करने वाले कलाकारों में ऋचा श्रीवास्तव, तमन्ना उपाध्याय, गर्व मिश्रा, व्योम सोमवंशी, श्रीधरम शुक्ला, रुद्र प्रताप सिंह, आराध्या ओझा, हासिम अली, खुशी मौर्य, चित्रा शर्मा, कृति मिश्रा, भूपेंद्र विश्वकर्मा, ऋतिक शुक्ला, श्रेयश कुशवाहा, प्रभात तिवारी, आदर्श मौर्य, अंजलि मिश्रा आदि रहे।

पेड़ काटने पर चार के खिलाफ केस दर्ज

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने जबरन आबादी की जमीन पर लगे पेड़ काट लेने को लेकर चार लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। लालगंज कोतवाली के रामपुर बावली खास निवासी रामेश्वर पाल के पुत्र जगत पाल ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि चैदह जनवरी को सुबह गांव के कलीम, नदीम, पप्पू व बिहार कुण्डा निवासी नावेद गांव स्थित आबादी की जमीन पर लगे पेड़ को जबरन काटने लगे। पीडित के मना करने पर गालीगलौज करते हुए जानलेवा धमकी भी दी और पेड की लकड़ी उठा ले गये। पुलिस ने जांच के बाद चार के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है।

खबर संक्षेप

मृतक कर्मचारी के वारिस पिता को सौपा बीमा का चेक

कौशाम्बी। अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) डॉ0 विश्राम ने प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना से आच्छादित कुम्भ मेला-2019 में कार्य किये हुए दैनिक वेतन भोगी सफाईकर्मी राकेश कुमार पुत्र छेदीलाल निवासी-नगियामई, तहसील सिराथू, कौशाम्बी की मृत्यु होने पर उनके वारिस पिता छेदीलाल को बीमा धनराशि देयक रू0-02 लाख का चेक प्रदान किया।

अपर पुलिस अधीक्षक ने भरवारी में किया पैदल गस्त

कौशाम्बी। श्रीराम प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम व गणतंत्र दिवस के दृष्टिगत जनपद में शान्ति, सुरक्षा व्यवस्था हेतु अपर पुलिस अधीक्षक कौशाम्बी द्वारा थाना कोखराज पुलिस बल के साथ रेलवे स्टेशन भरवारी पर भ्रमण कर संदिग्ध व्यक्तियों को चेक किया गया तथा आमजनमानस से वार्ता कर सुरक्षा का भरोसा दिलाया गया।

अपने आसपास की गंदगी करें साफ दूसरों को करें प्रेरित

जागरूकता के लिए ही चल रहा स्वच्छता अभियान : प्रभारी मंत्री

अखंड भारत संदेश

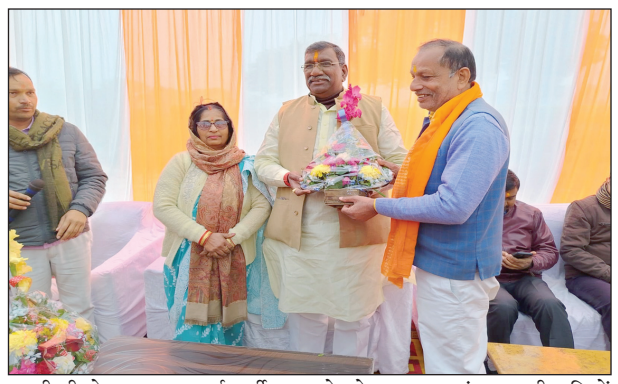

अझुवा कौशांबी भारतीय जनता पार्टी स्वच्छ तीर्थ अभियान चला रही है 14 से 21 जनवरी तक स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत प्रदेश कारागार मंत्री प्रभारी मंत्री सुरेश राही ने आदर्श नगर पंचायत अझुवा के पास स्थित भैरों बाबा(सकरा बाबा) प्राचीन धार्मिक स्थल पर झाड़ू उठाकर साफ सफाई किया स्वच्छता तीर्थ अभियान को सफल बनाने के लिए प्रभारी मंत्री ने आम जनमानस से अपील किया है उन्होंने कहा स्वच्छता भारतीय संस्कृति का अंग है कोई भी शुभ कार्य करने के पहले साफ सफाई करने के साथ ही खुद को भी स्वच्छ रखना चाहिए ।मंदिर में साफ सफाई अभियान के दौरान भाजपा पदाधिकारी ,कार्यकताओं के मंत्री ने मंदिर परिसर और उसके आसपास झाड़ू लगाकर सफाई की है।प्रभारी मंत्री ने कहा बचपन में हमने देखा है तब सफाई कर्मी नहीं रहते थे खुद सफाई करनी पड़ती थी तो अब हम सफाई कर्मी पर ही क्यों आश्रित रहे ,हम सभी को अपने कर्तव्य निभाने पड़ेंगे तभी सरकार और हम सबका स्वच्छ भारत का सपना साकार हो सकेगा ।विकसित भारत का सपना साकार होगा। इससे पहले प्रभारी मंत्री का नगर पंचायत अझुवा मे आगमन पर प्रभारी मंत्री का आदर्श नगर पंचायत अझुवा के कार्यालय में भव्य स्वागत सत्कार हुआ है मंत्री के आगमन को देखते हुए नगर पंचायत की गलियों रास्तों को साफ सफाई कर चाक चौबंद कर दिया था भैरम मंदिर पहुंचे प्रभारी मंत्री ने दर्शन कर भैरम बाबा धार्मिक स्थान पर साफ सफाई किया। कार्यक्रम के बाद नगर वासियों और धुमाई के ग्रामीणों ने धार्मिक स्थान पर भक्तों के ठहरने और विश्रामालय की मांग की प्रभारी मंत्री के पास ही बैठी जिला पंचायत अध्यक्ष कल्पना सोनकर ने एक हाल और 2 कमरे बनवाने का आश्वासन दिया मौके पर मौजूद ग्रामीणों ने कल्पना सोनकर के आश्वासन का ताली बजाकर स्वागत किया। कार्यक्रम में जिलाधिकारी सुजीत कुमार, एडीएम अरुण गोंड, उपजिला अधिकारी प्रबुद्ध सिंह अधिशाषी अधिकारी अझुवा रश्मि सिंह, नगर चेयरमैन शांती देवी कुशवाहा, ओमप्रकाश कुशवाहा, कपूर चंद्र केसरवानी, धूमाई प्रधान प्रतिनिधि महेंद्र सिंह, करन सिंह, ओम प्रकाश पासी, सौरभ केसरवानी, शीलू पांडेय, गुड्डू कुशवाहा, सत्येंद्र कुशवाहा, गुड्डू दराना, अच्छू भाई, मोनी कुशवाहा, मिथलेश केसरवानी प्रेम जायसवाल, ननका सभासद, सुरेश मौर्य सभासद, सभासद फूल चंद्र केसरवानी, सभासद सुघर सिंह, ननका स्वर्णकार, राजू मौर्य सहित तमाम भाजपा सम्मानित पदाधिकारी कार्यकर्ता नगर पंचायत के कर्मचारी, सफाई कर्मचारी नगरवासी मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

मंदिर एवम घरों में 22 जनवरी को जलाया जाए कम से कम 21 दीपक

कौशांबी चायल तहसील के बसुहार में ब्राह्मण समाज ने जिला अधिकारी के निदेशों का पालन करते हुए अयोध्या में राम जन्म भूमि की प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी 2024 के ले कर एक बैठक आयोजित किया जिसकी अध्यक्षता ग्राम सभा बसुहार प्रधान तीरथ सिंह ने किया इस बैठक में अयोध्या जी में होने वाली भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा को ध्यान में रखते हुए भोले नाथ के मंदिर में एवम गांव के सभी घरों में 22 जनवरी को कम से कम21 दीपक जलाया जाय क्यों की हमारे प्रभु श्री राम 22 जनवरी को अयोध्या जी के मंदिर में स्थापित किए जायेंगे आज वह दिन आ गया है जिसका वर्षो से इंतजार था राम मंदिर के पीछे बहुत लोगो ने अपनी जान गवाई है सफता का दिन आ गया है इस दौरान प्रधान तीरथ सिंह पूर्व प्रधान संगम लाल मिस्त्र गोलकाई मिस्त्र मोती लाल तिवारी बाल कृष्ण त्रिपाठी अनिल कुमार तिवारी कामता प्रसाद मिस्त्र विनय कृष्ण त्रिपाठी दुर्गेश नंदन मिस्त्र नीरज कुमार मिस्त्र कैलाश मिस्त्र नत्थू सेन एवम अन्य सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

कार सवार ने बाइक सवार को मारी टक्कर तीन घायल

चायल कौशांबी पिपरी कोतवाली क्षेत्र के लालापुर में कार सवार ने बाइक सवार को जोरदार टक्कर मार दिया जिससे बाइक सवार तीन लोग घायल हो गए घायलों को पीएचसी चायल इलाज के लिए ले जाया गया जहां पर हालत गंभीर होने के कारण जिला अस्पताल रिफर कर दिया। घटना क्रम के मुताबिक जितेंद्र कुमार पुत्र सोहन लाल उम्र 30 वर्ष निवासी सल्लाहपुर प्रयागराज व डब्लू पुत्र मोहन लाल मातपुर उम्र 28 आसिफ पुत्र समा निवासी मातपुर 36 वर्ष तिलहापुर मोड़ की तरफ जा रहे थे तभी तिल्हापुर मोड़ की तरफ से आ रही चार पहिया ने बाइक सवार को टक्कर मार दिया जिससे बाइक सवार सड़क पर गिर पड़े और लहूलुहान हो गए हादसा देखकर मौके पर लोगों की भीड़ लग गई है सूचना पर पहुंची पिपरी पुलिस ने घायलों को इलाज के लिए पीएचसी चायल में भर्ती कराया है।

घर घर जाकर बांटा जा रहा है श्री राम जन्म भूमि अयोध्या से पूजित अच्छत एवम निमंत्रण पत्र

नेवादा कौशाम्बी चायल तहसील के औधन गांव में बृहस्पतिवार को श्री राम जन्म भूमि अयोध्या से पूजित अच्छत एवं निमंत्रण पत्र को सेक्टर अध्यक्ष नारायण दास द्विवेदी की अगुवाई में घर घर जाकर बांटा गया और लोगो को संदेश दिया गया की भगवान श्री रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा योग का शुभ मुहूर्त पौष शुक्ल कूर्म द्वादशी विक्रम संवत 2080 दिन सोमवार 22 जनवरी, 2024 को है शास्त्रीय पद्धति के अनुसार प्राण-प्रतिष्ठा का कार्यक्रम अभिजीत मुहूर्त में संपन्न किया जाएगा जो 16 जनवरी 2024 से सुरू हो कर 21 जनवरी 2024 तक चलेगा 22 जनवरी को राम लला की मूर्ति को मंदिर के गर्भ गृह में स्थापित किया जाएगा प्राण प्रतिष्ठा में बारह अधिवास कराए जाएंगे जलाधिवास गंधाधिवास औषधाधिवास केसराधिवास घृताधिवास धान्याधिवास शर्कराधिवास फलाधिवास पुष्पाधिवास मध्याधिवास शय्याधिवास तत्पश्चात गौरी गणेश पूजन करके प्राण-प्रतिष्ठा किया जाएगा जिसमे 121 आचार्य प्रतिभाग करेंगे काशी के प्रकांड विद्वान लक्ष्मीकांत दीक्षित मुख्य आचार्य होंगे यजमान की भूमिका भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी निभाएंगे प्राणप्रतिष्ठा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूजनीय सरसंघचालक मोहन भागवत उत्तर प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की उपस्थिति में सम्पन्न किया जाएगा आप लोग अपने घरों एवम मंदिरों मे 22 जनवरी को कम से कम 21 दीपक जला कर भगवान राम के आगमन पर खुशी मनाए इस दौरान सेक्टर अध्यक्ष नारायण दास द्विवेदी ने रामबाबू केशरवानी को अच्छर व निमंत्रण दिया जिसमे सचिन केशरवानी सौरभ केशरवानी आदि लोग मौजूद रहे।

दबंग सिपाही ने गरीब के घर जाने का रोका रास्ता, विरोध पर पीटा

टेढ़ीमोड़ कौशाम्बी कोखराज थाना क्षेत्र के शहजादपुर गांव में मुकेश सोनकर पुत्र अमरनाथ सोनकर पुलिस विभाग में सिपाही के पद पर कार्यरत है। इन दिनों वह छुट्टी पर घर आया हुआ है। उसने अपने दबंगई के बल पर पड़ोस की रहने वाली निशा देवी के घर को जाने वाले रास्ते को बबूल के कांटे रखकर रास्ता रोक दिया। जब महिला ने इसका विरोध किया तो सिपाही गाली गलौज करने लगा।सिपाही का इतने से ही मन नही भरा तो अवैध पिस्टल लहराते हुए वह घर के अंदर घुसकर महिला व उसकी बहन की लड़की सरिता को मारा पीटा एवं उनके शारीरिक अंगों से छेड़खानी करने लगा। सिपाही के ऐसा करने से महिलाएं चिल्लाती हुई बाहर भाग खड़ी हुई तो वह चला गया। उसके कुछ देर बाद जब महिला पानी भरने के लिए हैंडपंप पर गई तो सिपाही ने महिला को पुनः दौड़ा लिया। जिस पर बचाव के लिए महिला ने 112 पर फोन कर दिया। पुलिस आई और समझा कर चली गई। इसके बावजूद सिपाही की हरकते और दबंगई कम नही हुई तो महिला ने पुलिस अधीक्षक कौशांबी को फरियाद लगाते हुए अपनी जान अस्मत की रक्षा की गुहार लगाते हुए दबंग सिपाही से बचाने को कहां है।

जालसाजी का शिकार युवक पहुंचा पुलिस अधीक्षक कार्यालय

कौशाम्बी। कौशाम्बी थाना क्षेत्र का इटैला गांव निवासी मनोज कुमार पुत्र अशोक कुमार जालसाजी का शिकार हो गया है। जालसाजी का शिकार युवक पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंचे युवक की तहरीर के आधार पर जांच शुरू हो गई है। युवक का आरोप है कि उसके मोबाइल नंबर 8795187879 पर एक अज्ञात व्यक्ति का 8226005029 नंबर से फोन आया और कहा कि गलती से मेरे द्वारा आपके खाते में तीस हजार पांच रुपए चला गया है कृपया आप वापस कर दीजिए इस दौरान प्रार्थी को उसकी बातों पर यकीन हो गया। युवक उसकी बातों में आकर क्युआर कोड के माध्यम से 17999 रुपए भेज दिया जबकि प्रार्थी के खाते में एक रुपए भी नही आया था।

गैंगेस्टर एक्ट के तीन अभियुक्तों को पांच-पांच वर्ष की कठोर कारावास की सजा

कौशांबी। गैंगेस्टर एक्ट के तीन अभियुक्तों को पांच-पांच वर्ष की कठोर कारावास की सजा अदालत ने सुनाई है माशूक उद्दीन, असलूब व शाहेजमन को गैंगस्टर एक्ट का दोषी मानते हुए 5-5 वर्ष की कठोर कारावास की सजा सुनाते हुए 25-25 हजार रुपया तीनों दोष सिद्ध अभियुक्तों पर अदालत ने अर्थ दंड लगाया है अपर सत्र न्यायाधीश/एफटीसी प्रथम / विशेष न्यायाधीश गैंगस्टर एक्ट की अदालत ने सुनाई सजा।16 जनवरी 2009 में दर्ज हुआ था गैंगस्टर का मुकदमा। पुरामुफ्ती थाना क्षेत्र के अहमदपुर असरौली गांव के रहने वाले तीनो अभियुक्त है।

29 लाख की लागत से बने पंचायत घर का उपयोग में नहीं आ सका समर सेबल

पंचायत घर निर्माण के बाद उसमें ताला बंद कर दिया गया है किसी प्रकार के कार्यक्रम में पंचायत घर को ग्रामीणों के उपयोग के लिए नहीं दिया जाता

कोखराज कौशाम्बी। नगर पालिका परिषद भरवारी के अंतर्गत बालक मऊ में 29 लख रुपए की लागत से कई वर्षों पूर्व पंचायत घर का निर्माण तो कराया गया था इस पंचायत घर में समरसेबल भी लगाया गया था लेकिन वर्ष 2017 के समय लगाया गया यह समरसेबल काम नहीं कर सका घटिया क्वालिटी के समान से लगाया गया समरसेबल उसी समय खराब हो गया लेकिन जिम्मेदारों ने खराब समरसेबल की अनदेखी कर दी वर्षो बीत जाने के बाद भी एक बूंद पानी समरसेबल से ग्रामीणों को नहीं मिल सका कई बार मामले की शिकायत भी जिम्मेदारों से ग्रामीणों ने की लेकिन उसके बाद भी घटिया समान से बने समरसेबल की जांच कराए जाने और कार्य दाई संस्था से रिकवरी कराए जाने का प्रयास नहीं हुआ पंचायत घर निर्माण में भी जमकर धांधली हुई है मानक के विपरीत सामग्री का निर्माण कर पंचायत भवन बनाया गया जिससे पंचायत भवन समय के पहले खराब होने लगे हैं इतना ही नहीं पंचायत घर निर्माण के बाद उसमें ताला बंद कर दिया गया है किसी प्रकार के कार्यक्रम में पंचायत घर को ग्रामीणों के उपयोग के लिए नहीं दिया जाता है जिससे जिम्मेदारों की मंशा का अंदाजा लगाया जा सकता है पंचायत घर निर्माण और समरसेबल में धांधली को लेकर यदि जांच हुई तो कार्यदायी संस्था पर कार्रवाई होना तय है।

ट्रक ने साइकिल सवार अधेड़ को कुचला

हादसे में अधेड़ की मौके पर हुई मौत, परिजनों में मचा कोहराम

कौशाम्बी। जिले में तेज रफ्तार ट्रक ने साइकिल सवार मजदूर को कुचल दिया, हादसे में अधेड़ मजदूर की मौके पर ही मौत हो गई,हादसे के बाद ट्रक चालक गाड़ी छोड़ कर भाग निकला, सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है, अधेड़ की मौत से परिजनों में कोहराम मचा हुआ है। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के थाभा निवासी बासुदेव उम्र 55 वर्ष पुत्र चंद्रपाल भट्ठा मजदूर था। गुरुवार की शाम वह साइकिल से घर लौट रहा था। गांव के समीप पहुंचा तभी पीछे से आए तेज रफ्तार ट्रक ने साइकिल सवार को कुचल दिया। हादसे के बाद ट्रक चालक गाड़ी छोड़ कर भाग गया। घटना के बाद आसपास के लोग भाग कर मौके पर पहुंचे और घटना की जानकारी परिजनों के साथ पुलिस को दी। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। अधेड़ की मौत से परिजनों में कोहराम मचा रहा।

एशिया की सबसे बड़ी ट्रस्ट कायस्थ पाठशाला प्रयाग के वाइस प्रेसिडेंट बनाए गए प्रखर श्रीवास्तव

प्रखर श्रीवास्तव के वाइस प्रेसिडेंट बनाए जाने से समर्थको में खुशी की लहर

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। प्रयागराज में स्थापित एशिया के सबसे बड़ी ट्रस्ट कायस्थ पाठशाला प्रयाग के चुनाव में डा० सुशील सिन्हा को प्रेसिडेंट चुना गया है वही कौशाम्बी के भरवारी स्थित महर्षि कॉलेज के प्रबंधक प्रखर श्रीवास्तव को कायस्थ पाठशाला प्रयाग का वाइस प्रेसिडेंट के लिए चुना गया है। संस्था के प्रेसिडेंट डा० सुशील सिन्हा ने प्रखर श्रीवास्तव को उनके पद का प्रमाण पत्र सौंपा है।प्रखर श्रीवास्तव के वाइस प्रेसिडेंट बनाए जाने पर उनके समर्थकों में खुशी की लहर दौड़ पड़ी।सभी ने एक दूसरे को मिठाई खिलाकर खुशी मनाई है।

मानक के विपरीत संचालित हो रहा आरडी मेमोरियल हॉस्पिटल

आरडी मेमोरियल हॉस्पिटल संचालक को भाजपा के एक बड़े नेता का प्राप्त है वरदहस्त

कौशाम्बी। पूरामुफ्ती स्थित आरडी मेमोरियल हॉस्पिटल भाजपा के एक बड़े नेता के रहमों करम पर मानक के विपरीत संचालित हो रहा है। आरडी मेमोरियल हॉस्पिटल संचालक के ऊपर भाजपा के एक बड़े नेता का हांथ बताया जा रहा है जिससे स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी आरडी मेमोरियल हॉस्पिटल के खिलाफ जांच और कार्यवाही करने से बचते रहते हैं। यदि स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने पूरामुफ्ती स्थित आरडी मेमोरियल हॉस्पिटल की निष्ठापूर्वक जांच कराई तो मानक के विपरीत चल रहे हॉस्पिटल की कमियों को देखकर स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों की आंख खुली की खुली रह जाएगी। जांच के दौरान ही संचालक और हॉस्पिटल के खिलाफ स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी कार्यवाही करने पर मजबूर हो जाएंगे। लोगों की माने तो लगभग एक दशक पूर्व भाजपा के एक बड़े नेता हॉस्पिटल उदघाटन समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित हुए और फीता काटकर अस्पताल उदघाटन समारोह को संपन्न कराया। जाते - जाते उक्त भाजपा नेता ने आरडी मेमोरियल हॉस्पिटल संचालक को वरदहस्त देकर गए कि जितना चाहो इलाज के नाम पर मरीजों को लूट लो मेरे रहते हुए तुम्हारा कोई कुछ बिगाड़ नहीं पाएगा। भाजपा के बड़े नेता का वरदहस्त प्राप्त होने के कारण मानक के विपरीत संचालित हो रहा आरडी मेमोरियल हॉस्पिटल लूट का अड्डा बन गया है। इलाकाई जनता आरडी मेमोरियल हॉस्पिटल संचालक के कारनामे से तंग आकर मानक के विपरीत संचालित हो रहे हॉस्पिटल के खिलाफ जांच और कार्यवाही की मांग स्वास्थ्य विभाग के उच्चाधिकारियों कर रहे हैं।

रोजगार मेले का आयोजन 20 जनवरी को

कौशाम्बी। उ0प्र0 कौशल विकास मिशन, राजकीय आई0टी0आई0 एवं सेवायोजन कार्यालय के संयुक्त तत्वाधान में दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजनान्तर्गत दिनांक 20 जनवरी 2024 को शान्ती देवी राजन बाबू डिग्री कॉलेज पश्चिम शरीरा के परिसर में वृहद रोजगार मेले का आयोजन किया जायेंगा, जिसमें 10 से अधिक नियोक्ता कम्पनियों द्वारा प्रतिभाग करते हुये 1000 से अधिक रिक्तियों के सापेक्ष्य योग्य अभ्यर्थियों के चयन की कार्यवाही की जायेंगी। यह जानकारी जिला समन्वयक कौशल विकास मिशन द्वारा देते हुए बताया गया कि रोजगार मेले में हाईस्कूल एवं आईटीआई/ डिप्लोमा उत्तीर्ण तथा कौशल विकास मिशन से प्रशिक्षण प्राप्त अभ्यर्थी दिनांक 20 जनवरी को प्रातः 10 बजे अपने समस्त शैक्षिक अंकपत्रों एवं प्रमाण पत्रों की छायाप्रति के साथ प्रतिभाग कर सकतें हैं।

मोंगरी के ताल में राजकीय नलकूप और जलभराव की समस्या का समाधान हो : अजय सोनी

सकिपा के तत्वावधान मे सिराथू ब्लॉक के ग्राम मोंगरी कड़ा के संपन्न हुई चौपाल

कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी के तत्वावधान मे गुरुवार 18 जनवरी को सिराथू ब्लॉक के ग्राम मोंगरी कड़ा में ग्राम चौपाल का आयोजन किया गया। चौपाल में तमाम किसान, नवजवान और ग्रामीण लोग शामिल हुए। चौपाल कार्यक्रम की अध्यक्षता चंद्रदेव तिवारी ने की जबकि मुख्य अतिथि के रूप मे जिला पंचायत सदस्य अजय सोनी मौजूद रहे। कार्यक्रम के प्रारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्प चढ़ाकर और अक्षत, धूप, दीप, अगरबत्ती से पूजन किया गया। इसके बाद कई वक्ताओं ने अपने विचार प्रकट किए। इस अवसर पर लोगों ने मोंगरी के ताल में सिंचाई के लिए सुविधा न होने से फसलों के सूखने से बचाव के लिए राजकीय नलकूप की स्थापना की मांग की। इसी के साथ मोंगरी के ताल में भारी बारिश होने पर जलभराव की समस्या से हर साल फसलों के डूबने का मामला उठाया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि समर्थ किसान पार्टी नेता एवं जिला पंचायत सदस्य अजय सोनी ने कहा कि मोंगरी के ताल में राजकीय नलकूप की स्थापना होने चाहिए। साथ ही जलभराव की समस्या के लिए नाला निर्माण होना जरूरी है। इसके लिए जिला प्रशासन से हम मांग करते हैं। साथ ही लोगों से समर्थ किसान पार्टी से जुड़ने एवं पार्टी को मजबूत करने का आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन नंद किशोर तिवारी ने किया। इस अवसर पर राजकरण द्विवेदी, अंकुश सिंह, राम मूरत मिश्रा, बिनोद कुमार दुबे, वीरेंद्र यादव, रामकुमार सरोज, घनश्याम निर्मल आदि मौजूद रहे।

गैस उपभोक्ताओं को चूल्हा और गैस सिलेंडर न मिलने के बाद धड़ाधड़ हो रहा है सिलेंडर रिफिल

नरेंद्र मोदी की उज्ज्वला योजना को चपत लग रहे गैस एजेंसी मालिक!

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अति महत्वाकांक्षी योजनाओं में भी चपत लगाने में लोगों को शर्म संकोच और तनिक भय नहीं लग रहा है योजना से जुड़े अधिकारियों की साठगांठ के चलते योजनाएं जमीनी हकीकत में उतरने के पहले ही चौपट हो जाती हैं योजना से जुड़े अधिकारी भी योजनाओं के सफल संचालन के लिए ठोस कदम नहीं उठा रहे हैं जिससे योजना से जुड़े अधिकारियों की भी हिस्सेदारी में शामिल होने से इनकार नहीं किया जा सकता है घर-घर गैस सिलेंडर पहुचाने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उज्ज्वला योजना का संचालन किया था लेकिन योजना के संचालन को 8 वर्षों से अधिक बीत जाने के बाद भी ग्रामीण क्षेत्रों में योजना का सफल संचालन नहीं हुआ है जबकि योजना के संचालन के आड़ में सरकार ने भारी भरकम रकम खर्च की है इस योजना के तहत उपभोक्ताओं को निशुल्क गैस चूल्हा और गैस सिलेंडर कंपनी की ओर से दिया जाना था लेकिन योजना का गैस चूल्हा और गैस सिलेंडर तमाम उपभोक्ताओं को कई वर्ष बीत जाने के बाद अभी तक नहीं मिल सका है सिलेंडर और चूल्हा ना मिलने के बाद उपभोक्ता मजबूर है और मिट्टी के चूल्हे में वह खाना बना रहा है जिससे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मंसूबे पर पानी फिरता दिख रहा है 7 उज्ज्वला योजना में भ्रष्टाचार की अंधेरगर्दी की हद तो तब हो गई जब उपभोक्ताओं को गैस सिलेंडर और चूल्हा न दिए जाने के बाद भी गैस सिलेंडर धडाधड रिफिल किए जा रहे हैं उज्ज्वला योजना के लाभार्थियों को सब्सिडी का लाभ मिल रहा है जो पूरी योजना में भ्रष्टाचार में शामिल अधिकारियों के चेहरे को बेनकाब कर रहा है लेकिन गैस सिलेंडर और गैस चूल्हा ना देने के आड़ में गैस एजेंसी कंपनी के अधिकारियों के साथ गैस डीलरों ने करोड़ो का खेल किया है जो बड़ी जांच का विषय है लेकिन कई वर्ष बीत जाने के बाद भी योजना में धांधली की उच्च स्तरीय जांच नहीं हो सकी है जिससे दोषी दंडित नहीं हुए और गरीबों को योजना का लाभ नहीं मिला। उज्ज्वला योजना की स्थिति इतनी बदतर है कि जब उपभोक्ता गैस सिलेंडर चूल्हे की डिमांड गैस डीलर से कर रहे है तो उपभोक्ताओं को धमकी दी जाती है उन्हें डांट डपटकर गाली गलौज कर एजेंसी से भगा दिया जाता है लेकिन निशुल्क मिलने वाला गैस चूल्हा और गैस सिलेंडर कई वर्ष का लंबा समय व्यतीत हो जाने के बाद अभी तक उपभोक्ताओं को नहीं मिल पाए हैं जिससे योजनाओं के सफल संचालन में लगाए गए अधिकारियों की लापरवाही और भ्रष्टाचार का अंदाजा लगाया जा सकता है मामले की बार-बार शिकायतें हुई लेकिन जांच के नाम पर गैस एजेंसी के लोगों द्वारा मामले में लीपा पोती कर दी जाती है जिससे उज्ज्वला योजना में हेरा फेरी करने वाले लोग बेनकाव नहीं हो पा रहे हैं उज्ज्वला योजना की हेरा फेरी की यदि केंद्र सरकार ने उच्च स्तरीय जांच कराई तो कई एजेंसी के कारनामे का खुलासा होना तय है। उज्ज्वला योजना के लाभार्थियों ने बताया कि कौशांबी जिले के मंझनपुर तहसील क्षेत्र के हसन एचपी एजेंसी मिरदहन का पूरा रक्सौली एजेंसी मालिक की तानाशाही से उज्जवला योजना की पात्र विधवा महिला को एजेंसी संचालक द्वारा निशुल्क मिलने वाला गैस सिलेंडर एवं चूल्हा आज तक नही दिया गया जबकि महिला गैसरानी के खाते में विगत डेढ़ वर्षो से सब्सिडी का पैसा आता है जिससे महिला मिट्टी के चूल्हा में खाना बनाने को मजबूर है यदि इसी मामले को लेकर के उच्च स्तरीय जांच कराई गई तो एचपी हसन गैस एजेंसी मालिक के कारनामे का खुलासा होना तय है मामले की शिकायत जिला पूर्ति अधिकारी से भी उपभोक्ताओ ने की लेकिन उसके बाद भी जिला पूर्ति अधिकारी ने उज्ज्वला योजना में धांधली के मामले को गंभीरता से नहीं लिया है जिससे गरीबों के साथ छल कपट फरेब कर मालामाल होने वाले एजेंसी संचालक के कारनामे बेनकाब नहीं हो सके हैं जो बड़ा गंभीर विषय है जिला पूर्ति अधिकारी की लापरवाही पर जिला अधिकारी ने मामले को संज्ञान लेकर जांच कराई तो एजेंसी मालिक के साथ-साथ जिला पूर्ति अधिकारी की भी मुसीबत बढ़ना तय है।

संपादक की कलम से

ईवीएम आंदोलन में विपक्ष अनुपस्थित

पिछले करीब 5 वर्षों से इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) को लेकर देश भर में संशय का माहौल है। बड़ी संख्या में लोगों का मानना है कि ये मशीनें सही नतीजे नहीं देतीं और इसे हैक किया जा सकता है। उनका आरोप है कि जबसे भारतीय जनता पार्टी की सरकार केन्द्र में आई है तभी से इनका जमकर दुरुपयोग हो रहा है। इसे लेकर विपक्ष के कई संगठन व नेता आवाजें तो उठाते रहे हैं परन्तु इसे लेकर कोई बड़ा आंदोलन नहीं हुआ, जिसकी जरूरत इसलिये महसूस की जाती है क्योंकि सरकार, निर्वाचन आयोग तथा सुप्रीम कोर्ट विपक्ष के या अन्य संगठनों की ओर से इस पर उठाये गये सवालिया निशानों का संतोषजनक उत्तर नहीं देती। अब इस मुद्दे पर दिल्ली में वरिष्ठ वकील सड़कों पर उतर आये हैं। कुछ सिविल सोसायटियों के लोग भी हैं पर इन आंदोलनों में जिनकी मुख्य शिरकत होनी चाहिये, वे सिरे से नदारद हैं- यानी विपक्षी दल।
सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ वकील भानुप्रताप सिंह, महमूद प्राचा, सत्यप्रकाश गौतम आदि निर्वाचन आयोग से मांग कर रहे हैं कि उन्हें कोई भी 50 वोटिंग मशीनें दिलाई जायें ताकि वे उन्हें हैक करने का प्रत्यक्ष प्रदर्शन कर सकें और इस धारणा को मिटा सकें कि ऐसा नहीं किया जा सकता। आयोग को इस विषय पर एक पत्र भी लिखा गया था जिसके जवाब में आयोग ने साफ किया कि मशीनें विश्वसनीय हैं।
आंदोलनकारी आयुक्त से मिलने का समय भी मांगते रहे जो उन्हें दिया ही नहीं गया। वैसे तो ईवीएम की गड़बड़ियों पर लम्बे समय से शक होता रहा परन्तु वह तब गहराता और पुख्ता होता गया जब बहुत से राज्यों के विधानसभा चुनावों के नतीजे अप्रत्याशित निकलते गये। जमीनी स्तर पर हालात कुछ और दिखते थे जबकि परिणाम इतने अलग निकले कि स्वयं जीतने वाले उम्मीदवार चौंक पड़ते थे। नवम्बर, 2023 के छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश एवं राजस्थान के चुनाव उदाहरण हैं। सारे विश्लेषक, पत्रकार, यहां तक कि आम जनता भी मानकर चल रही थी कि तीनों राज्यों में कांग्रेस जीतेगी। नतीजे एकदम विपरीत निकले। पिछले कुछ समय के अनेक राज्यों के चुनाव भी गिनाये जा रहे हैं जहां समझा जाता था कि भाजपा की जीत असम्भव है। फिर भी उसे विजय मिली। उत्तर प्रदेश में 2022 के प्रारम्भ में हुए चुनाव में उन इलाकों में भी भाजपा के प्रत्याशी जीते जहां विभिन्न कारणों से माहौल उसके खिलाफ था। लखीमपुर खीरी, हाथरस, उन्नाव आदि ऐसी ही सीटें थीं।
भाजपा की केन्द्र सरकार ईवीएम के पक्ष में डटकर खड़ी है। उसका दावा है कि मशीनें एकदम ठीक हैं और प्रतिपक्ष अपनी हार का ठीकरा ईवीएम पर फोड़ने का आदी है। इसके लिये हर चुनाव के पहले ईवीएम का विमर्श स्वयं भाजपा यह कहकर छेड़ देती है कि 'अगर भाजपा जीती तो विपक्षी दल ईवीएम का रोना रोएंगे।'
इसके बावजूद कई लोगों की दृढ़ मान्यता है कि भाजपा की लगातार जीत के पीछे इन्हीं मशीनों का हाथ है जिसे इस प्रकार से प्रोग्राम किया जाता है कि ज्यादातर वोट भाजपा के पक्ष में ही जाते हैं। कई भाजपा नेता तक कहते पाये गये हैं कि वोट किसी को भी दीजिये, मिलेगा तो भाजपा को ही। भाजपा की नीयत पर शक इसलिये होता है क्योंकि भाजपा के ही एक नेता जीएल नरसिम्हा राव ने 2010 में ईवीएम पर एक किताब लिखी थी 'डेमोक्रेसी एट रिस्क', जिसमें उन्होंने लिखा था कि ईवीएम से चुनाव कराना गलत है। पार्टी के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी ने इसकी भूमिका में लिखा था कि 'ईवीएम पर बैन लगाना लोकतंत्र को मजबूत करना है।' वहीं भाजपा अब इसके खिलाफ सुनने के लिये तैयार नहीं है।
इस दौरान एक और बात उठती रही है। वह है 19 लाख ईवीएम की गुमशुदगी। कहा जाता है कि विभिन्न राज्यों में ये मशीनें ही भाजपा की मर्जी के नतीजे देती है। इसमें कितनी सच्चाई है, कह नहीं सकते लेकिन इस पर सरकार का स्पष्टीकरण अपेक्षित है। अगर मशीनें वाकई गायब हैं तो उसे खोज निकालना होगा। इतनी तादाद में गुम मशीनें कोई भी निर्णय पलट सकती हैं। इसमें वीवीपैट का पक्ष भी अहम है। यह वह रसीद होती है जो बतलाती है कि वोट किसे दिया गया है। वह एक पर्ची के रूप में मतदाता को दिखता है। पहले यह पर्याप्त अवधि तक दिखलाई पड़ता था, परन्तु अब वह 6-7 सेकंड के लिये दिखता है और उसकी पारदर्शिता घटा दी गयी है। ईवीएम विरोधियों का तर्क है कि अगर मशीनों से ही चुनाव कराना हो तो पर्ची वोटर के हाथ में आये जिसे वह खुद बॉक्स में डाले और इसी की गिनती हो। आयोग को यह इस आधार पर मंजूर नहीं कि इससे परिणाम 3-4 दिन देर से निकलेंगे। यह तर्क इसलिये हास्यास्पद है क्योंकि कई बार नतीजे महीने भर बाद निकलते हैं। मशीनों का इस्तेमाल कई देश बन्द कर चुके हैं। भाजपा का इसके प्रति मोह व आग्रह शंकाओं को गहराता है।
असली सवाल यह है कि इन आंदोलनों में विपक्ष कहां है? ईवीएम की कथित गड़बड़ियों का सर्वाधिक नुकसान उसे है। वकीलों व सामाजिक कार्यकताओं को चुनाव लड़ना नहीं है फिर भी वे सड़कों पर हैं। फिर, विरोधी दल इस आंदोलन में क्यों नहीं हैं? कुछ नेताओं ने बयानबाजी की है पर वह नाकाफी है।

हवाई जहाज के किनारे भोजन उर्फ सबका साथ सबका विकास

- सर्वमित्रा सुरजन

ये हिंदू के जागने का ही असर है कि अब मोदीजी को सबका साथ, सबका विकास के वादे को पूरा करने में आसानी हो रही है। प्रधानमंत्री पद संभालने पर उन्होंने कहा था कि देश में ऐसा विकास कर देंगे कि हवाई चप्पल पहनने वाले भी हवाईयात्रा कर सकेंगे। उन्होंने ये कभी नहीं कहा था कि हवाई चप्पल पहनने वालों को अच्छे जूते पहनने लायक बना देंगे। यानी लोग जिस हाल में हैं, उसी हाल में या उससे बुरे हाल में कर देंगे, बस उन्हें हवा में उड़ने का सुख नसीब हो सकेगा।
हवाई जहाज के यात्रियों ने हवाई जहाज के बगल में, रनवे की जमीन पर बैठकर भोजन किया। ऐसा महान दृश्य इस महान देश ने कभी नहीं देखा था। पुराने जमाने में जब हवाई जहाज कम हुआ करते थे और गिने-चुने लोग ही हवाई यात्रा करते थे, तब जो लोग हवाई जहाज पर चढ़ नहीं पाते थे, वो हवाईयात्रियों को विमान की सीढ़ी तक छोड़ने और लेने जाया करते थे। यात्रियों के स्वागत और विदाई के लिए गेंदे की फूल-मालाएं हाथ में लेकर लोग जाते थे और दिल में एक हसरत भी कि काश कभी हम भी उड़ान भरने का सुख प्राप्त कर पाते। ये तो नेहरूजी जब तक प्रधानमंत्री रहे, उन्होंने देश के लाखों लोगों को विमानयात्रा से वंचित रखा। हवा में उड़ने का आनंद देने की जगह आम लोगों के लिए न जाने क्यों आईआईटी, आईआईएम बनवाए, इलाज, खेती, विज्ञान जैसे गैरजरूरी क्षेत्रों पर ज्यादा ध्यान दिया। सार्वजनिक निकाय खड़े किए ताकि लोगों को सरकारी नौकरियां मिल सकें। और अब जब सरकार नौकरी नहीं दे पा रही है, तो चंद देशद्रोही मोदी सरकार पर ही उन्हें बेरोजगार रखने का इल्जाम लगा रहे हैं। जबकि सारी गलती नेहरू की है। आरएसएस के आर्थिक संगठन स्वदेशी जागरण मंच के संयोजक अश्विनी महाजन ने इसे पूरे विस्तार से समझाया है।
श्री महाजन ने कहा है कि जवाहरलाल नेहरू की नीतियों के कारण लोग सरकारी नौकरियों के पीछे भागने लगे। हर साल करोड़ों लोग नौकरी बाजार में आते हैं न तो सरकार और न ही बहुराष्ट्रीय कंपनियां इतनी नौकरियां दे सकती हैं। इससे निपटने का एकमात्र तरीका उद्यमियों को तैयार करना है। भारत कभी उद्यमियों का देश था। हमें उस भारत का पुनर्निर्माण करना है, और यह केवल बड़े पैमाने पर समाज के सहयोग से ही हो सकता है। इस कथन की व्याख्या यही समझ आती है कि अब बेरोजगारी के आंकड़े जारी करने और उन पर चिंता जाहिर करने का कोई अर्थ नहीं है। क्योंकि सरकार नौकरी नहीं दे सकती है। मोदीजी ने चुनाव की रौ में भले 2 करोड़ रोजगार हर साल देने की बात कही थी, लेकिन बाद में उन्होंने पकौड़ा तलकर देश के पुनर्निर्माण में योगदान की राह दिखा दी थी। संघ उसी राह पर अब भारत को ले जाना चाहता है। इसलिए वह समाज से सहयोग की अपेक्षा कर रहा है।

गरीबी के अभिशाप से मुक्ति की ओर अग्रसर भारत

आजादी के अमृत काल में सशक्त भारत एवं विकसित भारत को निर्मित करते हुए गरीब एवं गरीबीमुक्त भारत के संकल्प की ओर सफलतापूर्वक आगे बढ़ना प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं उनकी सरकार की बड़ी उपलब्धि एवं ऐतिहासिक सफलता है। नीति आयोग के अनुसार जीवन स्तर सुधार, शिक्षा व चिकित्सा की उपलब्धता के आधार पर देश में कुल 24.82 करोड़ लोग बहुआयामी गरीबी से बाहर आए हैं। विगत नौ वर्ष में ऐसी गरीब कल्याण की योजनाओं को लागू किया गया है, जिससे भारत के भाल पर लगे गरीबी के शर्म के कलंक को धोने के सार्थक प्रयत्न हुए है एवं गरीबी की रेखा से नीचे जीने वालों को ऊपर उठाया गया है।

आजादी के 75 साल बाद भी भारत के सामने जो सबसे बड़ी चुनौतियां खड़ी रही है, इनमें गरीबी सबसे प्रमुख है। यही कारण है कि वर्ष 2047 के आजादी के शताब्दी समारोह के लिये जो योजनाएं एवं लक्ष्य तय किये हैं, उनमें गरीबी उन्मूलन के लिये भी व्यापक योजनाएं बनायी गयी है। गरीबी के अभिशाप से देश की एक बड़ी आबादी को निकालने के लिए मोदी सरकार के प्रयत्न निश्चित ही सराहनीय है। नीति आयोग के मुताबिक देश में वर्ष 2013-14 में बहुआयामी गरीबी 29.17 फीसदी थी जो वर्ष 2022-23 में घटकर 11.28 प्रतिशत रह गई है। बहुआयामी गरीबी के आंकड़े जुटाते समय पोषण, बाल व किशोर मृत्यु दर, स्वच्छता, पीने का पानी, बिजली, आवास और संपत्ति के साथ-साथ बैंक खातों के मापदंडों को भी ध्यान में रखा जाता है। इसके साथ ही शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार भी गरीबी से बाहर आने की स्थितियों के मूल्यांकन का आधार है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि पिछले सालों में इन तीनों ही मोर्चों पर देश में उल्लेखनीय सफलता हासिल करते हुए समानता, संतुलन एवं गरीबी उन्मूलन का काफी काम हुआ है। इसी का नतीजा है कि नीति आयोग की ताजा रिपोर्ट में हर्ष एवं उल्लास की यह खबर दी गई है कि बीते नौ साल के दौरान करीब पच्चीस करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आ गए हैं। देश की विशाल आबादी के इस बड़े हिस्से से जुड़ा यह आंकड़ा इसलिए भी राहत देने वाला कहा जा सकता है कि कभी ह्यबीमारूह्व राज्य कहे जाने वाले बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश सरीखे राज्यों में गरीबी में सबसे ज्यादा कमी आई है।
दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थ-व्यवस्था बनने की ओर अग्रसर भारत के लिये गरीबी से बाहर आना एवं गरीबी के कलंक को धोना जरूरी है। यह माना भी जाता है कि किसी भी देश का आर्थिक विकास लोगों में समृद्धि लाने वाला होता है। लेकिन, यही समृद्धि जब आर्थिक असमानता का प्रतीक बन जाए तो चिंता का सबब एवं त्रासदी बन जाती है। चिंता इस बात की भी रही है कि आजादी के प्रारंभिक पचास वर्षों की सरकारों के सामने गरीबी उन्मूलन का लक्ष्य कोरा भाषणों, नारों एवं दिखावे का रहा, यही कारण है कि उस दौर में विकास के जरिए होने वाली आर्थिक समृद्धि का फायदा भी गिने-चुने हाथों में पहुंचता रहा है। गरीब और गरीब एवं अमीर और अमीर होते हुए देखे गये। इस तरह की राजनीतिक प्रेरित योजनाएं गरीबी उन्मूलन के प्रयासों में सबसे ज्यादा बाधक बनी।
प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के अनुसार देश में आतंकवादी वारदातें कम होने, भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने, सरकार के ईमानदारी और पारदर्शिता से काम करने के साथ उनकी सरकार ने गरीबों के कल्याण के लिए ज्यादा से ज्यादा धन खर्च किया है और 13.5 करोड़ लोगों को गरीबी रेखा से बाहर निकाला है। निश्चित ही भारत से गरीबी दूर हो रही है। इन सुखद आंकडों के साथ देशवासियों को?इस बात का अहसास कराया जा रहा है कि जब देश आर्थिक रूप से मजबूत होता है तो तिजोरी ही नहीं भरती बल्कि देश का सामर्थ्य भी बढ़ता है।?निश्चित ही गरीबी के अभिशाप को पूरी तरह समाप्त करने के लिये परिवारवाद, भ्रष्टाचार और तुष्टिकरण के खिलाफ लड़ने की जरूरत है क्योंकि ये गरीब, पिछड़े, आदिवासियों और दलितों का हक छीनते हैं, इनसे गरीब को समाप्त हो जाते हैं लेकिन गरीबी नहीं। वित्त वर्ष 2015-16 से लेकर 2019-21 के मोदी सरकार के 5 वर्षों के दौरान ग्रामीण इलाकों में सबसे ज्यादा गरीबों की संख्या में कमी आई है। ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबों की संख्या 32.59 फीसदी से घटकर 19.28 फीसदी रह गई है। इसी अवधि के दौरान शहरी इलाकों में गरीबी 8.65 फीसदी से 5.27 फीसदी रह गई है। नीति आयोग के ताजे आंकड़ों के अनुसार प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, सौभाग्य योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, पीएम जनधन योजना और समग्र शिक्षा के चलते भी देश में गरीबी कम हुई है और लोगों का जीवन बदला है। इसके बावजूद अभी भी देश में एक बड़ा तबका है, जो बुनियादी सुविधाओं के अभाव वाला जीवन जीने को मजबूर है। यह स्पष्ट संकेत है कि तमाम कल्याणकारी योजनाओं के बावजूद गरीबी उन्मूलन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए नए विचारों एवं कल्याणकारी योजनाओं पर विमर्श के साथ गरीबों के लिये आर्थिक स्वावलम्बन-स्वरोजगार की आज देश को सख्त जरूरत है। गरीबों को मुफ्त की रेवड़िया बांटने एवं उनके वोट बटोरने की स्वार्थी राजनीतिक मानसिकता से उपरत होकर ही गरीबीमुक्त संतुलित समाज संरचना की जा सकती है।
सतत गरीबी उन्मूलन के लिये व्यापक कार्य किया जाना अपेक्षित है। नया भारत-सशक्त भारत बनाने की जरूरत यह नहीं है कि चंद लोगों के हाथों में ही बहुत सारी पूंजी इकट्ठी हो जाये, पूंजी का वितरण ऐसा होना चाहिए कि विशाल देश के लाखों गांवों एवं करोड़ों लोगों को आसानी से उपलब्ध हो सके। लेकिन क्या कारण है कि महात्मा गांधी को पूजने वाला पूर्व सत्ताशीर्ष का नेतृत्व उनके ट्रस्टीशीप के सिद्धान्त को बड़ी चतुराई से किनारे करता रहा है। यही कारण है कि एक ओर अमीरों की ऊंची अट्टालिकाएं हैं तो दूसरी ओर फुटपाथों पर रेंगती गरीबी। एक ओर वैभव ने व्यक्ति को विलासिता दी और विलासिता ने व्यक्ति के भीतर क्रूरता जगाई, तो दूसरी ओर गरीबी तथा अभावों की त्रासदी ने उसके भीतर विद्रोह की आग जला दी। वह प्रतिशोध में तपने लगा, अनेक बुराइयां बिन बुलाए घर आ गईं। नई आर्थिक प्रक्रिया को आजादी के बाद दो अर्थों में और बल मिला। एक तो हमारे राष्ट्र का लक्ष्य समग्र मानवीय विकास यानी गरीबी उन्मूलन के स्थान पर आर्थिक विकास रह गया। दूसरा सारे देश में उपभोग का एक ऊंचा स्तर प्राप्त करने की दौड़ शुरू हो गई है। इस प्रक्रिया में सारा समाज ही अर्थ प्रधान हो गया है। लेकिन मोदी सरकार अर्थ की दौड में दुनिया की सर्वोच्च आर्थिक ताकत बनने के साथ गरीबी को दूर करने के लिये भी ठोस काम कर रही है।
राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ भी आर्थिक असंतुलन एवं गरीबी को दूर करने एवं समतामूलक समाज की स्थापना के लिये प्रतिबद्ध है। संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले के अनुसार पिछले कुछ वर्षों में भारत के सार्थक प्रयास से सुरक्षा, विज्ञान, चिकित्सा, खाद्यान्न सहित कई क्षेत्रों में प्रगति की है। भारत विश्व में आर्थिक रूप से संपन्न 5 देशों में शामिल हो चुका है। श्रीराम मन्दिर प्राण-प्रतिष्ठा के साथ ही गरीबी के आंकड़ों में गिरावट से दुनिया हैरान हो रही और यह अमृत काल की अमृत उपलब्धि है। फिर भी कल्याणकारी योजनाओं व आर्थिक संबल के अलावा भी देश को स्वावलम्बी बनाने, महंगाई व बेरोजगारी की चुनौतियों के दक्षतापूर्ण एवं कुशल प्रबंधन की जरूरत है। आर्थिक विकास का लाभ समाज के वंचित और शोषित वर्ग तक सुलभ होता रहे, यह अपेक्षित है। इसके लिये मोदी सरकार बिना शोर-शराबे के गरीबी उन्मूलन के मिशन पर लगी है, जिसके आश्चर्यकारी एवं सुखद परिणामों से देशवासी ही नहीं, दुनिया भी स्तंभित होती रहेगी।
प्रेषकः

(ललित गर्ग)
ई-253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट 25 आई. पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-92

डिजीटल युग के लिए खतरनाक है डीपफेक (सम-सामयिक)

आज विज्ञान और तकनीक का युग है और विज्ञान तथा तकनीक का उद्देश्य यह रहा है कि इससे मानव जीवन बेहतर और अच्छा बनें। सच तो यह है कि मानव समाज की प्रगति,उसका उत्तरोत्तर विकास ही विज्ञान और तकनीक का असली उद्देश्य रहा है लेकिन आज के समय में विज्ञान और तकनीक दोनों का ही मानव द्वारा दुरुपयोग किया जा रहा है। विज्ञान और तकनीक मानव के लिए वरदान है तो अभिशाप भी साबित हुई है। डीपफेक इन दिनों काफी चर्चा में है।मनोरंजन के उद्देश्य से मनोरंजक वीडियो और तस्वीरें बनाना ही डीपफेक का एकमात्र उपयोग नहीं है। जो चीज शौकिया प्रयोग के रूप में शुरू हुई थी वह अब एक संभावित खतरनाक तकनीक बन गई है।फिल्म जगत से लेकर बड़ी राजनीतिक हस्तियों तक का डीपफेक बनाया गया है। जानकारी देना चाहूंगा कि पिछले दिनों भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर तक का डीपफेक विडियो बन चुका है। डीपफेक विडियो में एक्सप्रेशन रीयल लगते हैं लेकिन वे रीयल होते नहीं है।केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा था कि 'डीपफेक लोकतंत्र के लिए एक नया खतरा बनकर उभरा है।' केंद्रीय मंत्री ने बताया था कि सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स ने डीपफेक के खतरे और इसकी गंभीरता को स्वीकार किया है। वैष्णव ने कहा था कि डीपफेक के क्रिएटर्स और उसको होस्ट करने वाले प्लेटफॉर्म की जिम्मेदारी तय होगी।आज देश-दुनिया में 'डीपफेक' के मामले लगातार बढ़ते ही चले जा रहे हैं। यहां प्रश्न यह उठता है कि आखिर डीपफेक है क्या ? तो पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि वास्तव में डीपफेक का तात्पर्य कृत्रिम मीडिया से होता है, जिसमें एक मौजूदा छवि या वीडियो में एक व्यक्ति की के स्थान पर किसी दूसरे को इतनी अधिक समानता से लगा दिया जाए कि उनमें अंतर करना कठिन हो जाए। यहां पाठकों को यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि डीपफेक एआई(आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) एक प्रकार की कृत्रिम बुद्धिमत्ता है जिसका उपयोग ठोस छवियां, ऑडियो और वीडियो धोखाधड़ी बनाने के लिए किया जाता है। आज के इस युग में नकली छवियां बनाई जातीं हैं और वीडियो-आडियो में हेरफेर किया जाता है। डीपफेक बनाने के लिए आज जेनेरेटिव एडवरसैरियल नेटवर्क (जीएएन) जैसे उन्नत एआई एल्गोरिदम का उपयोग किया जा रहा हैं। बताना चाहूंगा कि डीपफेक टेक्नोलॉजी का आविष्कार वर्ष

2014 में किया गया था और इसे गुडफेलो और उसकी टीम ने पेश किया था। डीपफेक में आमतौर पर डीप लर्निंग एल्गोरिदम, विशेष रूप से जेनरेटिव एडवरसैरियल नेटवर्क (जीएएन) का उपयोग शामिल होता है, जो डेटा में पैटर्न का विश्लेषण और नकल कर सकता है। यह भी जानकारी मिलती है कि डीपफेक शब्द पहली बार 2017 में यूज किया गया था। तब अमेरिका के सोशल न्यूज एग्रीगेटर रेडिट पर डीपफेक आईडी से कई सेलिब्रिटीज के वीडियो पोस्ट किए गए थे। इसमें एक्ट्रेस एमा वॉटसन, गैल गैडोट, स्कारलेट जोहानसन के कई पोर्न वीडियो थे। सरल शब्दों में कहें तो हम यह बात कह सकते हैं कि किसी रियल वीडियो, फोटो या ऑडियो में दूसरे के चेहरे, आवाज और एक्सप्रेशन को फिट कर देने को डीपफेक नाम दिया गया है। ये इतनी सफाई से होता है कि कोई भी इस पर यकीन मान बैठता है। इसमें फेक भी असली जैसा लगता है।इसमें मशीन लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का सहारा लिया जाता है। इसमें वीडियो और ऑडियो को टेक्नोलॉजी और सॉफ्टवेयर की मदद से बनाया जाता है।आज सोशल मीडिया का युग है, हर कोई सोशल मीडिया का उपयोग, प्रयोग करता है। हर कोई आज सोशल मीडिया का प्रयोग तो धड़ल्ले से करते हैं लेकिन धोखाधड़ी से डरते हैं। सच तो यह है कि डीपफेक टेक्नोलॉजी इंसानों की प्राइवेसी के लिए एक बड़ा खतरा साबित हो रही हैं। जानकारी देना चाहूंगा कि डीपफेक टेक्नोलॉजी में कोडर और डिकोडर टेक्नोलॉजी की मदद ली जाती है। डिकोडर सबसे पहले किसी इंसान के चेहरे को हावभाव और बनावट की गहन जांच करता है। इसके बाद किसी फर्जी फेस पर इसे लगाया जाता है, जिससे हुबहू फर्जी वीडियो और फोटो को बनाया जा सकता है। हालांकि इसे बनाने में काफी टेक्नोलॉजी की जरूरत होती है, ऐसे में आम आदमी डीपफेक वीडियो नहीं बना सकते हैं, लेकिन समस्या यह है कि आजकल डीपफेक बनाने से जुड़े अनेक एप्स मौजूद हैं, जिनकी मदद से आसानी से डीपफेक वीडियो को बनाये जा सकते हैं। इसलिए आज के समय में इससे बचने की आवश्यकता है। वास्तव में हमारी सतर्कता से हम इससे बच सकते हैं। जैसे डीपफेक वीडियो को हम फेशियल एक्सप्रेशन से पहचान सकते हैं।फोटो और वीडियो के आईब्रो, लिप्स आदि को देखकर और उसके मूवमेंट से भी इसकी पहचान बखूबी की जा सकती है। हालांकि सरकार भी डीपफेक को लेकर काफी सतर्क है और मीडिया के हवाले से यह पता चला है कि सरकार डीपफेक के खिलाफ जल्द ही नये नियम लाने जा रही है। आने वाले समय में सोशल मीडिया फर्म्स पर एक्शन लिया जा सकेगा। जानकारी देना चाहूंगा कि नये आईटी नियमों में गलत सूचना और डीपफेक को लेकर बड़े प्रावधान हैं। सभी के लिए इसका पालन करना अनिवार्य है, नहीं तो कार्रवाई की जाएगी। 'डीपफेक' एक नई समस्या है। यह लोगों को गुमराह करती है,भ्रम फैलाती है और दुष्प्रचार करती है। सिर्फ सेलिब्रिटी, राजनीतिक हस्तियां और रईस व्यक्ति और फिल्म स्टार ही नहीं कोई भी कभी भी डीपफेक का शिकार हो सकते हैं। आज घर-घर तक मोबाइल फोन और इंटरनेट की पहुंच हो गई है। जानकारी देना चाहूंगा कि 2010 के दशक में भारत में सस्ते स्मार्टफोन और सेल्युलर डेटा सर्वव्यापी हो गए, तो इंटरनेट की पहुंच में विस्फोट हो गया। यह कोई विकास नहीं बल्कि एक क्रांति थी। इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अनुसार, भारत के इंटरनेट उपयोगकर्ता 2010 में 100 मिलियन से बढ़कर 2015 तक 400 मिलियन हो गए और 2020 में 600 मिलियन से ऊपर। जानकारी देना चाहूंगा कि भारत में वर्ष 2021 तक मोबाइल फोन के 1.2 अरब उपयोगकर्ता थे। इसमें से 75 करोड़ स्मार्टफोन का इस्तेमाल करते हैं। डेलॉयट के 2022 ग्लोबल टीएमटी (प्रौद्योगिकी, मीडिया और मनोरंजन, दूरसंचार) अनुमान के अनुसार, ह्यघरेलू बाजार में 2026 तक स्मार्टफोन का इस्तेमाल करने वाले लोगों की संख्या बढ़कर एक अरब पर पहुंचने का अनुमान है।ह्व डेलायट के विश्लेषण के अनुसार, भारत स्मार्टफोन की मांग सालाना आधार पर छह प्रतिशत बढ़कर 2026 में 40 करोड़ हो जाएगी, जो 2021 में 30 करोड़ थी। ऐसे में एंड्रॉयड फोन के इस युग में डीपफेक से बचना बहुत ही जरूरी है। एंड्रॉयड फोन के कारण आज आर्थिक अपराध भी काफी बढ़ गए हैं। लोगों के बैंक खाते खाली हो रहे हैं। आज एआई-जनित साइबर हमले का एक उदाहरण डीपफेक है।व्यवसाय जगत में, साइबर अपराधी किसी व्यक्ति विशेष का रूप धारण करने, व्यवसाय संचालन में बाधा डालने, किसी कंपनी के बारे में नकारात्मक जानकारी फैलाने और पैसे चुराने के लिए डीपफेक का उपयोग कर सकते हैं। इसलिए यह जरूरी है कि व्यवसाय डीपफेक जैसे एआई-सक्षम साइबर खतरों से बचाव के लिए जवाबी उपाय लागू करना शुरू करें। आज डीपफेक डिटेक्टर तकनीक से डीपफेक को पकड़ा जा सकता है। वास्तव में डीपफेक की चुनौती से निपटने के लिए इंटरनेट उपयोगकर्ताओं को ज्यादा सजग रहना होगा। वहीं, पुलिस और जांच एजेंसियों को साइबर अपराधियों पर शिकंजा कसने के लिए अत्याधुनिक तकनीक के साथ अधिक सक्षम बनना होगा। सोशल मीडिया पर डीपफेक वीडियो की पहचान हम स्वयं भी कर सकते हैं। इसके लिए वीडियो पर दिखने वाले शख्स के चेहरे के एक्सप्रेशन, आंखों की बनावट और बॉडी स्टाइल पर ध्यान देना होता है।आमतौर पर ऐसे वीडियो में बॉडी और चेहरे का कलर मैच नहीं करता है, जिससे हम इसे आसानी से पहचान सकते हैं। साथ ही, लिप सिंकिंग से भी डीपफेक वीडियो को आसानी से पहचाना जा सकता है। इसके अलावा, डीपफेक वीडियो और फोटो को पहचानने में दिक्कत आ रही है, तो हम इस संबंध में एआई टूल का सहारा ले सकते हैं। आज कई एआई टूल ऐसे हैं, जो आसानी से एआई जेनरेटेड वीडियो की पहचान कर सकते हैं।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

निरंतर परिश्रम, संयम और महत्वाकांक्षा सफल व्यक्ति के सच्चे मित्र

जिंदगी का मूल ही निरंतर संघर्ष श्रम संकल्प और प्रगति है। सकारात्मक उद्देश्य को लेकर किया गया श्रम सदैव श्रेष्ठ परिणाम देता है। श्रम और संघर्ष का कोई विकल्प ही नहीं है। निरंतर श्रम करना उच्च मनोबल बनाए रखना और सफलता की कामना और पवित्र महत्वाकांक्षा सफल मनुष्य के सच्चे मित्र होते हैंह्न जीवन है चलने का नाम,गति का नाम ही जीवन है। सभी समाज एवं राष्ट्र की संस्कृतियों ने यह माना है कि मनुष्य और जानवरों के बीच विभेद करने वाला प्रमुख कारक मस्तिष्क है, और मस्तिष्क ही मनुष्य को सृजनात्मक शक्ति प्रदान करता है। मनुष्य के रचनात्मक विचार नयापन लाते हैं उसे पूर्व काल से पृथक करते हुए प्रगति के पथ प्रदर्शक बनते हैं। इसे ही नवप्रवर्तन माना जाता है। नावप्रवर्तन और कुछ नहीं बल्कि समाज की परंपरागत और प्रगतिशील मानसिकता के बीच एक बड़ी लाइन खींचना है। इसीलिए यह माना जाता है कि नवप्रवर्तन समाज मैं 3% नवाचार का निर्धारित है, शेष 97 प्रतिशत परंपरावादी विचारों के लिए है। पुराने समय से ही आर्थिक समृद्धि में नवप्रवर्तन की भूमिका को स्वीकार किया गया है चाहे वह मनुष्य के खाद्य संग्राहक से खाद्य उत्पादक में परिवर्तन हो या फिर 18वीं सदी में यूरोप की वाणिज्य क्रांति का औद्योगिक क्रांति में बदलना इन सभी में नवप्रवर्तन ने प्रेरक का काम किया है। हम चौथी क्रांति की तरफ बढ़ रहे हैं, इसलिए कहा जाता है कि विचारों को कभी सुसुप्त होने या मरने ना दिया जाए। हो सकता है आपके विचार करोड़ों डॉलर के हो । वर्तमान अर्थव्यवस्था में समृद्धि के इंजन माने जाने वाले सनराइज उद्योग, सॉफ्टवेयर, खाद्य संस्करण, इलेक्ट्रॉनिक्स, रोबोटिक के विकास के पीछे भी नवप्रवर्तन का हाथ है। इसी के आधार पर नगरों को स्मार्ट नगरों में बदला जा रहा है। नवप्रवर्तन या नवाचार से मैं सिर्फ मानव जीवन की परेशानियों को न्यूनतम किया है, बल्कि मानव जीवन को आसान और सुखमय भी बनाया जा रहा है। नवप्रवर्तन और मस्तिष्क की खोज के कारण ही जापान में 6.5 रेक्टर का भूकंप सामान्य माना जाता है,जबकि भारत में यह तबाही ला सकता है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में पेनिसिलिन जैसी प्रतिजैविक (एंटीबायोटिक) के अविष्कार ने रोगों की संभावना को कम कर दिया एवं स्वास्थ्य प्रणाली के भावी विकास को एक गति प्रदान की है। जेनेरिक औषधि, रोबोटिक सर्जरी, जीन एडिटिंग जैसी प्रक्रिया स्वास्थ्य सुधार हेतु एक मजबूत आधार मानी जाती है। सामाजिक विकास आर्थिक समन्वयक और न्याय प्रणाली में पारदर्शिता लाने का प्रयास नवप्रवर्तन के योगदान से ही आया है। सोशल मीडिया जैसे नवीन प्लेटफार्म ने व्यक्ति की अभिव्यक्ति के अधिकार को स्वतंत्र किया है। भारतीय अर्थव्यवस्था के ग्रामीण से आधुनिक रूपांतरण में कृषी क्षेत्र से भारी उद्योगों पर बल देने में किसानों के देश को सॉफ्टवेयर उद्योग का सिरमौर बनाने में नवप्रवर्तन का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारतीय कृषि में भी आधुनिकीकरण और पाश्चात्य उपकरण का प्रादुर्भाव भी नवीन नवाचार के कारण संभव हुआ है। भारतीय राज्य को लोक कल्याणकारी राज्य से लोगों के सशक्तिकरण करने वाले राज्य में बदलने की नवप्रवर्तन की भूमिका अत्यंत सराहनीय है। इसके कारण भार मानी जाने वाली महिलाएं अब भार ढोने वाली की भूमिका में आ चुकी हैं। इसी तरह न्यायिक क्षेत्र में जनहित याचिका की अवधारणा ने न्याय की अवधारणा को सर्वांगीण बनाने में सहायता प्रदान की है। यह अलग बात है कि केवल नवप्रवर्तन को ही एकमात्र निर्धारक कारक के रूप में नहीं माना जा सकता क्योंकि नवीन विचारों को स्वीकार करना और आगे बढ़ना बहुत हद तक समाज पर निर्भर करता है। पश्चिमी देशों में नवीन विचारों को जगह देने के कारण वहां पुनर्जागरण आया है। हमें समाज को नव परिवर्तन की तरफ जागरूक करने की आवश्यकता होगी और नवप्रवर्तन में ज्यादा से ज्यादा आर्थिक मदद देकर उस और और ज्यादा विचार-विमर्श कर नीति बनाने की आवश्यकता होगी। इस तरह हमें महात्मा बुद्ध के कथन अनुसार अपने या दूसरों के विचारों नवप्रवर्तनों को तर्क बुद्धि पर देखे जाने की जरूरत है, और फिर आगे बढ़ने का प्रयास किया जाना चाहिए।

संजीव ठाकुर, स्तंभकार , चिंतक, लेखक, रायपुर छत्तीसगढ़, 9009 415 415,

सपा-बसपा वोट बैंक तुष्टिकरण से आराध्य की नहीं कर पा रहे पूजा: प्रकाश पाल

सभी लोग 22 को मनायें दीवाली

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। भाजपा की जिला स्तरीय बैठक कानपुर बुन्देलखण्ड क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल के मुख्य आतिथ्य, जिलाध्यक्ष लवकुश चतुवेर्दी की अध्यक्षता में डाक बंगला सभागार में हुई। क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल ने स्वच्छता श्रमदान के बाद कर्वी नगर मंडल के गांधीगंज शक्तिकेंद्र के बूथ संख्या 395 में दीवार लेखन के तहत एक बार फिर मोदी सरकार का लेखन किया।

गुरुवार को बैठक में क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल ने कहा कि भाजपा विभिन्न अभियानों से सीधे

भाजपा जिला स्तरीय बैठक में बोलते क्षेत्रीय अध्यक्ष।

जनता से संवाद कर रही है। कार्यकर्ता बेहतर बूथ प्रबंधन से अनुकूलता को सफलता में बदल सकते हैं। भाजपा की मूल ताकत बूथ समिति है। भाजपा निरंतर जनसम्पर्क से सशक्त हुई है। उन्होंने कहा कि 22 जनवरी को श्रीराम मंदिर का उद्घाटन होने जा रहा है, सपा-बसपा के लोग वोट बैंक तुष्टिकरण से आराध्य की पूजा भी नहीं कर पा रहे। 22 जनवरी को घर-घर दीप जलाने का काम करना है। विकसित भारत संकल्प यात्रा में पीएम नरेंद्र मोदी का लाइव सम्बोधन में कर्वी ब्लॉक में सहभागी हुए। जनसंवाद करते हुए प्रकाश पाल ने कहा कि विकसित भारत यात्रा से मोदी के विकास की गारंटी वाली गाड़ी गांव-गांव लोगों को योजनाओं का लाभ दिला रही है। जिलाध्यक्ष लवकुश चतुवेर्दी ने कहा कि जो अभियान चल रहे हैं, सभी को मिलकर पूरा करना है। मोदी की अगुवाई में भाजपा की पुनः सरकार बने, सभी पदाधिकारी कार्यकर्ताओ को पार्टी के अभियानो में समर्पित सहभागिता करनी है। क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल ने होटल व्यवसायी एसोसिएशन से संवाद करते हुए आग्रह किया कि भगवान राम अयोध्या के बाद चित्रकूट में ही सर्वाधिक समय रहे। 22 जनवरी के रामोत्सव मनायें।

इस मौके पर सांसद आरके सिंह पटेल, जिला पंचायत अध्यक्ष अशोक जाटव, पूर्व सांसद रमेश चन्द्र द्विवेदी, भैरो प्रसाद मिश्रा, पूर्व मंत्री चन्द्रिका प्रसाद उपाध्याय, डीसीबी चेयरमैन पंकज अग्रवाल, चेयरमैन कर्वी नरेन्द्र गुप्ता, ब्लाक प्रमुख अरविंद मिश्रा, सुशील द्विवेदी, गंगाधर मिश्रा, महामंत्री आलोक पाण्डेय, भागवत त्रिपाठी पूर्व जिलाध्यक्ष चन्द्रप्रकाश खरे, तीरथ तिवारी, देव त्रिपाठी, शिवशंकर सिंह, अर्जुन शुक्ला, आनन्द पटेल, जयप्रकाश पांडे, जगदीश गौतम, राजेश जायसवाल, राघवेन्द्र सिंह, बृजेश पांडे, हीरो मिश्रा, दिव्या त्रिपाठी, साधना सिंह, सुरेश अनुरागी, मनोज तिवारी, प्रेमलाल बाल्मीक, घनश्याम पटेल, राजाराम पाल, विपुल प्रताप, युधिष्ठिर सिंह, शिवाकांत पांडे, दिनेश पटेल, बाबूलाल पटेल आदि मौजूद रहे।

आर्यावर्त बैंक क्षेत्रीय प्रबंधक सतीश कुमार को मिला प्रशस्ति पत्र

अखंड भारत संदेश

प्रशस्ति पत्र लेते क्षेत्रीय प्रबंधक।

चित्रकूट। शासन से संचालित अटल पेंशन योजना में उत्कृष्ट कार्य करने पर आर्यावर्त बैंक शाखाओं को जिले में पहला स्थान मिलने पर आर्यावर्त बैंक मुख्यालय लखनऊ के अध्यक्ष संथोस एस ने क्षेत्रीय प्रबंधक सतीश कुमार को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

गुरुवार को क्षेत्रीय प्रबंधक सतीश कुमार ने चित्रकूट आर्यावर्त क्षेत्रीय कार्यालय से संचालित सभी 41 शाखा प्रबंधकों को बधाई दी। कहा कि ये उपलब्धि किसी एक व्यक्ति की नहीं है, टीम भावना से किए कार्य के बूते प्रशस्ति पत्र मिला है। जो कार्य कर रहे हैं, किसानों, ग्राहकों के हित में है। हमारे ऊपर और जिम्मेदारी आ गई है कि बेहतर ढंग से कार्य करना है। शासन से संचालित योजनाओं का लाभ किसानों व बैंक ग्राहकों को देने है। क्षेत्रीय प्रबंधक ने कहा कि टीम में शामिल सभी 41 शाखा प्रबंधक व बैंक कर्मचारी आर्यावर्त बैंक क्षेत्रीय कार्यालय में कार्यरत वित्तीय समावेशन विभाग के प्रबंधक प्रियांशु यादव, श्रेया कुमारी सहायक प्रबंधक समेत वरिष्ठ प्रबंधक ऋण सियाराम द्विवेदी, वरिष्ठ प्रबंधक वसूली विभाग अमित चंद्रा, वरिष्ठ प्रबंधक क्रेडिट वैभव वर्मा, अंशुल गुप्ता, उज्जवल कुमार झा, प्रभात शुक्ला सभी कर्मचारियों की मेहनत का सुखद परिणाम है। कुल 794105 बचत खाते हैं, सभी ग्राहकों को उत्तम बैंकिंग सेवायें देकर शासन की योजनाओं का लाभ दिलाते हैं। प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन सभी योजनाओं में बेरोजगारों, महिला समूहों को वित्तीय सहायता देकर रोजगार को तैयार किया जाता है। बढ़ती बेरोजगारी में स्वरोजगार ही कमाई का जरिया है।

लोस चुनाव को प्रभावित करेंगे भ्रष्ट लिपिक, राजनीतिक चर्चा में रहते हैं मशगूल

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर दागी व भ्रष्ट कर्मचारियों को जिले में कहीं और न भेजने व जिले से बाहर न भेजने पर चुनाव को प्रभावित कर सकते हैं। ऐसे दागी व भ्रष्ट कर्मचारी विभिन्न विभागों में मौजूद हैं, जो सरकार की नीतियों से खफा होने के साथ राजनैतिक रुप से कहीं न कहीं जुडे हैं।

दागी व भ्रष्ट कर्मचारियों की जिले के विभिन्न विभागों में भरमार है। ऐसे कर्मचारियों का खुलासा गुरुवार को हुआ। बताया गया कि कलेक्टेज्ट में एडीएम कार्यालय में तैनात लिपिक जगदीश प्रसाद पाण्डेय भ्रष्टतम रवैया अख्तियार किये है। इस लिपिक का भाई सकरौली गांव का पूर्व प्रधान भी रहा है। कहीं न कहीं इसके राजनैतिक सम्बन्ध हैं। इसी तरह से ये लिपिक भी राजनैतिक गतिविधियों में लिप्त रहता है। समय रहते इसे जिले से बाहर न किया गया तो लोकसभा चुनाव को प्रभावित करने में इसकी अहम भूमिका रहेगी।

इसी तरह से अन्य विभागों में भी तमाम लिपिक व कर्मचारी हैं, जो किसी न किसी राजनैतिक दल के करीब हैं। इनमें ज्यादातर लोग सपा व बसपा की राजनीति में लिप्त रहते हैं। ऐसे कर्मचारियों को समय रहते जिले में अन्य तहसीलों या गैर जिले में न भेजने से लोकसभा चुनाव में भाजपा को क्षति पहुंचा सकते हैं। इन कर्मचारियों की पृष्ठभूमि खंगाली जाये तो ये राजनैतिक दलों को समय-समय पर सहयोग भी करते हैं। ये सहयोग आर्थिक व शारीरिक के साथ विभाग से जो सम्भव होता है, वह सहयोग करते आ रहे हैं। ये लिपिक व कर्मचारी विभागीय कार्य कम, राजनैतिक चर्चा में ज्यादा मशगूल रहते हैं।

तमंचा समेत एक दबोचा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर अपराधियों की धरपकड़ को जारी अभियान में पहाडी थानाध्यक्ष श्याम प्रताप पटेल की अगुवाई में दरोगा विपिन कुमार मिश्रा की टीम ने जयप्रकाश द्विवेदी पुत्र जगदीश द्विवेदी निवासी दरसेड़ा को एक तमंचा 315 बोर व दो कारतूस समेत दबोचा है। टीम में दरोगा विपिन कुमार मिश्रा, सिपाही जयप्रकाश विश्वकर्मा व संजीव सोनी शामिल रहे।

रामलला: प्राण प्रतिष्ठा में रहेगा दीवाली माहौल: सांसद

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। स्वच्छ तीर्थ अभियान के तहत नगर पालिका परिषद ने मंदाकिनी पुल के नीचे शंकर मंदिर परिसर में सफाई अभियान चलाया।

गुरुवार को सवेरे मन्दाकिनी पुल के पास शंकर जी के मन्दिर में भाजपा के क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल, सांसद आरके सिंह पटेल, जिला पंचायत अध्यक्ष अशोक जाटव, भाजपा जिलाध्यक्ष लवकुश चतुवेर्दी, नगर पालिका अध्यक्ष नरेंद्र गुप्ता, कोआपरेटिव बैंक अध्यक्ष पंकज अग्रवाल आदि ने हाथों में झाड़ू लेकर विधिवत साफ-सफाई की। सफाई अभियान

पुल घाट में सफाई करते भाजपा नेता।

दौरान सांसद आरके सिंह पटेल ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर सफाई अभियान जारी है। ये अभियान 22 जनवरी को अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के मद्देनजर पूरे प्रदेश के मन्दिरों की साफ-सफाई की जा रही है। 22 जनवरी को प्रदेश में दीपावली जैसा माहौल बनाने को ये सफाई अभियान चलाया जा रहा है।

इस मौके पर पूर्व जिलाध्यक्ष चंद्रप्रकाश खरे, भाजपा नेता जगदीश प्रसाद गौतम, हीरो मिश्रा, भागवत त्रिपाठी, तीरथ तिवारी, ईओ लालजी यादव, सफाई निरीक्षक कमलाकांत शुक्ला, जिला कार्यक्रम प्रबंधक स्वच्छ भारत मिशन शिवा कुमार आदि कर्मचारी मौजूद रहे। विशेष सफाई अभियान में मंदिरों को पॉलीथिन मुक्त करने का अभियान चलाकर आसपास के लोगों व मंदिर के पुजारियों को जागरूक किया। नगर पालिका सफाई कर्मचारी व सुपरवाइजर भी मौजूद रहे।

पदाधिकारियों को कांग्रेसियों ने दी बधाई, मजबूत करेंगे पार्टी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। कांग्रेस जिलाध्यक्ष कुशल सिंह पटेल एड ने तहसील के सामने आनंद स्वरूप तिवारी के आवास पर किसान कांग्रेस के महासचिव तीरथ सिंह, प्रदेश सचिव अजीत शुक्ला को पदाधिकारी बनाने पर किसान कांग्रेस जिलाध्यक्ष राजेश सिंह को माल्यार्पण कर बधाई दी।

गुरुवार को नवनिर्वाचित युवा कांग्रेस जिलाध्यक्ष अतुल तिवारी, मानिकपुर विधानसभा अध्यक्ष अजय द्विवेदी, विधानसभा उपाध्यक्ष सुनील पटेल की मौजूदगी में कांग्रेसियों ने माल्यार्पण

बैठक में बोलते जिलाध्यक्ष।

कर बधाई दी। नवनिर्वाचित टीम को जिलाध्यक्ष कुशल सिंह पटेल ने निर्वाचित होने पर बधाई देते हुए अपेक्षा की कि किसान कांग्रेस युवा साथी मिलकर जिले में कांग्रेस को मजबूत करेंगे। जहां उनकी जरूरत पड़े, वह साथ खड़े रहेंगे। सभी मिलकर 2024 लोस चुनाव में बांदा-चित्रकूट में इंडिया गठबंधन प्रत्याशी को जिताकर संसद में भेजेंगे। पीसीसी सदस्य रंजना बराती लाल पांडे ने नवनिर्वाचित युवा कांग्रेस साथियों को बधाई दी। मनोनीत किसान कांग्रेस के प्रदेश पदाधिकारी को भी बधाई दी। उम्मीद जताई कि सभी लोग मिलकर जिले में कांग्रेस को मजबूत करेंगे। देश में जिस तरह से महंगाई, बेरोजगारी, तानाशाही, संविधान व लोकतंत्र पूरी तरह से भाजपा सरकार कुचल रही है, सभी मिलकर अन्याय के खिलाफ संघर्ष कर कांग्रेस के हाथों को मजबूत करेंगे। विपक्ष की आवाज सरकार दबाने का काम कर रही है। आम जनता के बीच जाकर भाजपा के झूंठ की राजनीति का पदार्फाश करेंगे। कांग्रेस नेता राहुल गांधी के भारत जोड़ो न्याय यात्रा लेकर मणिपुर से मुंबई तक निकले हैं। इस मौके पर जिला उपाध्यक्ष अवधेश करवरिया, विजयमणि त्रिपाठी, राजनारायण निषाद, राजेश सिंह, अनु द्विवेदी, रोहित तिवारी, इंद्रेश गौतम, मिंटू तिवारी, ओम नारायण मिश्रा, सुनील सिंह यादव, आनंद स्वरूप तिवारी, हरिओम पांडे आदि मौजूद रहे।

पुलिस गिरफ्त में छेडछाड का वारंटी।

पुलिस ने छेडछाड-लूट के वारंटी को दबोचा

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में प्रभारी निरीक्षक मऊ राजेश कुमार द्विवेदी की अगुवाई में दरोगा इन्द्रजीत गौतम ने घर में घुसकर गाली-गलौज व जान से मारने की धमकी तथा छेडछाड, लूट व एससी/एसटी एक्ट के वारंटी शनि तिवारी पुत्र चन्द्रिका प्रसाद तिवारी निवासी यमुना रोड को गिरफ्तार किया। टीम में दरोगा इन्द्रजीत गौतम व सिपाही राहुल पाण्डेय शामिल रहे।

गैंगेस्टर एक्ट में तीन को हुई तीन-तीन वर्ष की सजा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निदेर्शों के अनुपालन में प्रभारी निरीक्षक राजापुर मनोज कुमार व पैरोकार आकाश कुमार की पैरवी से न्यायालय ने गैंगेस्टर के तीन आरोपियों को तीन-तीन वर्ष की सजा व दस-दस हजार रुपये के जुमार्ना से दंडित किया। गुरुवार को सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता सनद कुमार मिश्रा की प्रभावी बहस के चलते न्यायालय अपर जनपद न्यायधीश/एफटीसी (न्यू) सुशील कुमार वर्मा ने राजापुर थाने में दर्ज गैगेस्टर एक्ट के आरोपी पंकज पटेल पुत्र केशव प्रसाद पटेल निवासी चनहट व अजीत सिंहपुत्र शिव सिंह निवासी रायपुर तथा पप्पू पुत्र बोधन निवासी रमपुरिया को तीन-तीन वर्ष की सजा व दस-दस हजार रुपए के जुमार्ना से दंडित किया। ज्ञात है कि 30 अगस्त 2010 को पूर्व थानाध्यक्ष टीकाराम वर्मा ने राजापुर थाने में तीनों के खिलाफ गैंगेस्टर एक्ट दर्ज किया था। मुकदमे की विवेचना पूर्व थानाध्यक्ष नन्दलाल सिंह ने कर 30 मई 2021 को आरोपियों के खिलाफ न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया था।

सुरक्षा समिति के सदस्यों को एसपी ने चेताया

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र अयोध्या में भगवान श्री रामलला की मूर्ति स्थापना प्राण प्रतिष्ठा व 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के मद्देनजर पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर विभिन्न थाना क्षेत्रों के गांवों में ग्राम सुरक्षा समिति की बैठक में सदस्यों को बताया कि गांव में सक्रिय रहें, ताकि किसी भी प्रकार की आपराधिक गतिविधि पर नजर रखी जा सके।

गुरुवार को बैठक में ग्राम सुरक्षा समिति के सदस्यों से कहा कि अपराध पर प्रभावी अंकुश लगाने को पुलिस से तत्काल तालमेल करें। पुलिस अधीक्षक ने

बैठक में निर्देश देते एसपी।

सदस्यों से कहा कि रामलला प्राण प्रतिष्ठा व गणतंत्र दिवस पर बाहर से आने वाले लोगों पर भी नजर रखें। कौन किसके यहां आ रहा है, उसके उससे क्या संबंध हैं। गांव में बाहरी लोगों के आवागमन पर भी नजर रखें। बैठक में प्रधान, क्षेत्र पंचायत सदस्य, सुरक्षा समिति के सदस्यों समेत अन्य ग्रामीण मौजूद रहे।

दस लीटर महुआ शराब में एक दबोचा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर अवैध शराब निर्माण एवं बिक्री की रोकथाम को जारी अभियान में चैकी प्रभारी सरैंया यदुवीर सिंह की टीम ने रामआसरे पुत्र स्व जयराम यादव निवासी चंद्रापुरवा मजरा हनुवा के कब्जे से दस लीटर महुआ शराब समेत गिरफ्तार किया। उसके खिलाफ थाना मानिकपुर में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया। टीम में चैकी प्रभारी सरैंया यदुवीर सिंह, सिपाही चंद्रभूषण राय व रोहित सिंह यादव शामिल रहे।

बस्ती उजाडने के विरोध में माकपा ने किया प्रदर्शन

लिंक मार्ग निकालने का विरोध

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। माकपा जिला सचिव का रुद्र प्रसाद मिश्र एड की अगुवाई में प्रस्तावित लिंक मार्ग गोंडा-रामपुरमाफी की जगह लिंक रोड बदलाव कर भरतकूप की गरीबों की कालोनियां व बस्ती उजाडने के विरोध में जुलूस निकालकर प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने सूबे के मुख्यमंत्री सम्बोधित ज्ञापन एसडीएम सदर को सौंपा।

गुरुवार को माकपा जिला सचिव का रुद्र प्रसाद मिश्र एड की

बस्ती उजाडने के विरोध में जुलूस निकालती माकपा।

अगुवाई में भरतकूप की पीडित महिलाओं ने जुलूस निकालकर प्रदर्शन करते हुए तहसील मुख्यालय पहुंची। यहां मुख्यमंत्री सम्बोधित ज्ञापन एसडीएम सदर को सौंपा। ज्ञापन में कहा कि प्रस्तावित लिंक रोड गोंडा-रामपुरमाफी को पूंजीपतियों एवं प्रभावशाली क्रशर एवं बालू कारोबारियों के दबाव में जिला प्रशासन मार्ग बदलाव का प्रयास कर रहा है। मार्ग बदलाव से कालोनियां-बस्ती उजाडने की साजिश है। उन्हें 15 जनवरी को धमकी दी गई है कि प्रधान व सांसद कथित प्रतिनिधि संतोष सिंह पटेल व तहसीलदार समेत राजस्व विभाग, यूपीडा के अधिकारी कह रहे हैं कि आसानी से हट जाओ, अन्यथा कालोनी व झोपडियां गिरा देंगे। सामान बाहर फेंक दिया जायेगा। आये दिन धमकियों से परेशान एवं घबराकर वे धरना-प्रदर्शन को मजबूर हुए हैं। स्टोन क्रशर मालिकों व धनबली उन्हें उजाडने की साजिश कर रहे हैं। चेताया कि उनकी न सुनी गई तो वे मजबूर होकर गम्भीर कदम उठायेंगे। इस मौके पर शान्ती, छोटेलाल, भूरा, कल्लू, राधा, रामरती, धनिया, शीलू आदि मौजूद रहे।

साले की शादी में आये जीजा की नदी में डूबने से मौत

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। साले की शादी में आये जीजा की पयश्वनी नदी में डूबने से मौत हो गई। युवक की मौत से शादी का माहौल मातम में बदल गया गुरुवार को मप्र के निवाड़ी जिले के जेरोन गांव से राहुल पुत्र पन्नालाल की बारात कोतवाली थाना क्षेत्र के रगौली गांव आई थी। गांव के कल्लू की बेटी मल्हू देवी की शादी में पयश्वनी नदी पुलघाट किनारे शिव मंदिर में गुरुवार को शादी होनी थी। जनाती व घराती मंदिर किनारे कमरे में ठहरे थे। सवेरे से शादी की चहल-पहल मची थी। परिजनों ने बताया कि नदी में नहाने को भीषण ठंड में लोगों की हिम्मत नहीं हुई। राहुल के जीजा लखनलाल (30) पुत्र पर्वतलाल नदी में उतर गया। बहुत ज्यादा ठंड होने से गहराई में गया तो ऊपर नहीं आया। ये देख रिश्तेदारों में चीखपुकार मच गई। कोतवाली पुलिस सूचना पर पहुंची। एक घंटे की मशक्कत बाद उसे नदी से निकाला। लोग जिला अस्पताल ले गए, डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। सीतापुर चैकी प्रभारी श्यामदेव सिंह ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम को भेजा है। युवक मजदूरी कर परिवार का भरण-पोषण करता था।

नामावलियों का पुनरीक्षण 23 को

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। अपर जिला मजिस्ट्रेट/उप जिला निर्वाचन अधिकारी वंदिता श्रीवास्तव ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग ने एक जनवरी के आधार पर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों की निर्वाचक नामावलियों के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण में नामावलियों का अंतिम प्रकाशन 22 जनवरी की जगह अब 23 जनवरी को करने के निर्देश दिये हैं।

अधिवक्ता संघ महासचिव पद पर होगा मुकाबला

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। मानिकपुर तहसील के अधिवक्ताओं से कहा कि अधिवक्ता संघ मानिकपुर के चुनाव राजकुमार पांडे एड निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित हुए। उपाध्यक्ष पद पर राजकुमार पाल एड निर्विरोध, कोषाध्यक्ष पद पर रामकेश पयासी एड निर्विरोध, संयुक्त सचिव प्रकाशन प्रवक्ता पद में गोविंद प्रसाद निर्विरोध, संयुक्त सचिव प्रशासन यमुना प्रसाद शुक्ला एड निर्वाचित, कनिष्ठ उपाध्यक्ष दस वर्ष से ऊपर दुर्गा प्रसाद एड निर्विरोध, कनिष्ठ उपाध्यक्ष दस वर्ष से नीचे

मुकाबले को तैयार अधिवक्ता।

अनोखेलाल प्रजापति निर्विरोध निर्वाचित हुए। महासचिव पद में अखिलेश्वर सिंह एड, जितेंद्र मोहन शुक्ला के बीच मुकाबला होगा। मतदान 24 जनवरी को पूर्वान्ह 11 बजे से एक बजे तक होगा। दो बजे से तीन बजे तक गिनती होगी।

महंत श्रीराम दास के नाम से जाना जाएगा आश्रम

अखंड भारत संदेश

मऊ/चित्रकूट। तहसील क्षेत्र के भटगंवा में श्रीमद्भागवत महापुराण कथा में भागवताचार्य दुर्गादत्त शास्त्री ने कहा कि भगवान कृष्ण व सुदामा की मित्रता वर्तमान में उच्चतम आदर्श है। मित्रता में समर्पण के साथ अटूट प्रेम का अनुपम उदाहरण है। गुरुवार को भागवताचार्य ने कहा कि मोह में संसार में मनुष्य दिवा स्वप्न देखता है, भगवान दयालु है, सुदामा को बिना मांगे महल दे दिया। स्वागताध्यक्ष हरिश्चन्द्र ने आगंतुकों का स्वागत किया। डा आदित्य-माला ने आभार जताया। पं रामसागर पांडेय का पट्टाभिषेक मंत्रोच्चारण से हुआ। सिद्ध श्री हनुमान आश्रम का उन्हें महंत घोषित किया। महंत श्रीराम दास के नाम से अब आश्रम जाना जाएगा। श्रीमती रेनू तिवारी, प्रभा-कांती समेत 15 महिला पुरुषों को उत्कृष्ट योगदान को दुपट्टा-स्मृति चिन्ह देकर आशीर्वाद दिया। आरती बाद पूणार्हुति हवन हुआ। आयोजक भगवती प्रसाद पांडेय ने कहा कि 19 जनवरी को विशाल भंडारा होगा।

22 जनवरी को नेपाल के तीन हजार से अधिक प्राचीन मंदिरों में होगी विशेष पूजा

काठमांडू। अयोध्या में 22 जनवरी को होने जा रहे रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह के दिन नेपाल के तीन हजार से अधिक मंदिरों में विशेष पूजा पाठ, हवन, भजन, कीर्तन करने की तैयारी की गई है।

काठमांडू के पशुपतिनाथ मंदिर से लेकर सभी शक्तिपीठों में 22 जनवरी को विशेष पूजा की तैयारी की गई है। काठमांडू के ही बुढानिलकण्ठ मंदिर, गुहेश्वरी मंदिर, मैतीदेवी मंदिर, दक्षिणकाली मंदिर, शोभा भगवती मंदिर, भद्रकाली आदि शक्तिपीठों में सुबह के समय विशेष पूजा, दोपहर को भजन कीर्तन और शाम को विशेष हवन किए जाने की तैयारी है।

विश्व हिन्दू परिषद नेपाल के महासचिव जीतेन्द्र सिंह ने कहा कि काठमांडू सहित देश के सभी बड़े और प्रसिद्ध मंदिरों में 22 जनवरी को विशेष आयोजन किया गया है। उन्होंने कहा कि सभी मंदिरों में स्थानीय लोगों के सहयोग से ही इन सब कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है।

काठमांडू के अलावा मुक्तिनाथ मंदिर, पोखरा के विन्ध्यवासिनी मंदिर, सप्तरी के छिन्नमस्ता भगवती मंदिर, सुनसरी जिले के दन्तकाली मंदिर, बांके जिला के बागेश्वरी मंदिर, सल्यान जिले के कमलाक्षी, गोकर्ण के भैरवी मंदिर, दैलेख के ज्वालादेवी, पर्सा के गहवा माई मंदिर, बारा के गढीमाई मंदिर, मकवानपुर के मनोकामना मंदिर, नुवाकोट के जलपा देवी सहित एक हजार से अधिक प्रसिद्ध देवी मंदिरों में विशेष आयोजन रखा गया है।

विश्व हिन्दू परिषद नेपाल के संगठन महासचिव प्रह्लाद रेग्मी ने कहा कि तीन हजार की संख्या नेपाल के प्राचीन और बडे मंदिरों की है। उन्होंने दावा किया कि पूरे नेपाल के हर गली मुहल्ले में रहे तीस हजार से अधिक मंदिरों में 22 जनवरी को कोई ना कोई कार्यक्रम रहने वाला है। रेग्मी के मुताबिक इन शक्तिपीठों और प्राचीन मंदिरों के अलावा नेपाल में लगभग सभी जिलों में भगवान श्रीराम का भी मंदिर है जहां 22 जनवरी को विशेष कार्यक्रम रखा गया है। उन्होंने कहा कि कई स्थानों पर तो स्थानीय लोगों के द्वारा अष्टजाम, अखण्ड पाठ, लखराउ, सामूहिक रामचरित मानस का पाठ जैसे अन्य प्रकार के धार्मिक कार्यक्रम भी रखा गया है। रेग्मी ने यह भी बताया कि विश्व हिन्दू परिषद के समन्वय के अलावा भी नेपाल के हर शहर और गांव में स्थानीय लोगों में 22 जनवरी को लेकर एक अलग तरह का उत्साह देखने को मिल रहा है।

नेपाल ने 12 वर्षों में 28000 मेगावाट बिजली उत्पादन का रखा लक्ष्य

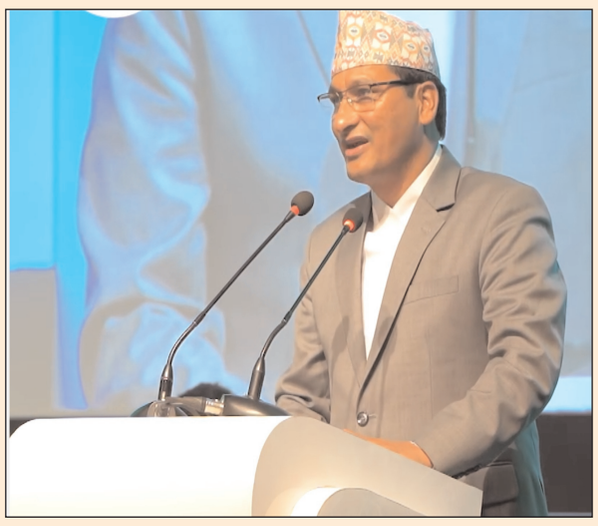

काठमांडू,। नेपाल सरकार ने 12 वर्षों में 28000 मेगावाट बिजली उत्पादन का लक्ष्य रखा है। भारत के साथ अगले 10 वर्षों में 10 हजार मेगावाट बिजली खरीद का समझौता होते ही नेपाल ने बिजली उत्पादन की क्षमता को बढ़ाने का निर्णय किया है।

नेपाल के ऊर्जा मंत्री शक्ति बस्नेत ने गुरुवार को पत्रकारों को बताया कि सरकार 12 वर्ष में 28000 मेगावाट बिजली उत्पादन की योजना पर काम कर रही है। भारत के साथ दीर्घकालिक बिजली व्यापार समझौता होने के साथ ही इसको पूरा करने के लिए नई नीति बनाकर आगे बढ़ने की आवश्यकता है। हाल ही में भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर के नेपाल दौरे में दीर्घकालीन बिजली व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर होने के बाद सरकारी और निजी क्षेत्र के बिजली उत्पादकों का उत्साह बढ़ा है।

भारत के साथ बिजली समझौता होते ही नेपाल के निजी क्षेत्र सहित भारत की कई बड़ी कंपनियों ने नेपाल के जलविद्युत परियोजना में अपनी दिलचस्पी दिखाई है। नेपाल के ऊर्जा मंत्री ने कहा कि भारत की सरकारी कंपनी सतलज और एनटीपीसी सहित निजी क्षेत्र के जीएमआर ग्रुप, अडाणी ग्रुप और रिलायंस एनर्जी के प्रतिनिधियों से अलग-अलग जलविद्युत परियोजना में निवेश की चर्चा शुरू हुई है।

नेपाल की सबसे बड़ी जलविद्युत परियोजना पंचेश्वर को लेकर जल्द ही भारत के साथ समझौता होने की जानकारी दी गई है। ऊर्जा मंत्री बस्नेत ने कहा कि 6400 मेगावाट के प्रस्तावित इस जलविद्युत परियोजना की क्षमता को बढ़ाकर 10 हजार किए जाने पर भी विचार किया जा रहा है। मंत्री का दावा है कि पंचेश्वर परियोजना नेपाल के इतिहास में बड़ा गेमचेंजर साबित होने वाला है।नाटो की क्षमता का प्रदर्शन करेगा।"

नाटो 90,000 सैनिकों के साथ शीत युद्ध के बाद सबसे बड़ा अभ्यास करेगा

ब्रुसेल्स। नाटो शीत युद्ध के बाद से अपना सबसे बड़ा अभ्यास 'स्टीडफास्ट डिफेंडर 2024' शुरू कर रहा है। इसमें निकट भविष्य में एक करीबी प्रतिद्वंद्वी के साथ उभरते संघर्ष परिदृश्य को देखते हुए रूस की सीमा से लगे देशों और गठबंधन के पूर्वी हिस्से में यूरोपीय सहयोगियों को कैसे मजबूती प्रदान की जाएगी इसका अभ्यास किया जाएगा।

गठबंधन के शीर्ष कमांडर क्रिस कैवोली ने गुरुवार को कहा कि लगभग 90,000 सैनिक स्टीडफास्ट डिफेंडर 2024 अभ्यास में शामिल होंगे, जो मई तक चलेगा। नाटो ने कहा है कि विमान वाहक से लेकर विध्वंसक तक 50 से अधिक जहाज, साथ ही 80 से अधिक लड़ाकू जेट, हेलीकॉप्टर और ड्रोन और 133 टैंक और 533 पैदल सेना से लड़ने वाले वाहनों सहित कम से कम 1,100 लड़ाकू वाहन इस अभ्यास में भाग लेंगे।

कैवोली ने कहा कि अभ्यास में नाटो द्वारा अपनी क्षेत्रीय योजनाओं के कार्यान्वयन का पूर्वाभ्यास किया जाएगा, यह गठबंधन द्वारा दशकों में तैयार की गई पहली रक्षा योजना है जिसमें विस्तार से बताया जाएगा कि यह रूसी हमले का जवाब कैसे देगा। हालांकि नाटो ने अपनी घोषणा में रूस का नाम नहीं लिया लेकिन इसका शीर्ष रणनीतिक रक्षा पंक्ति रूस को नाटो सदस्यों की सुरक्षा के लिए सबसे महत्वपूर्ण और प्रत्यक्ष खतरे के रूप में पहचानता है।

नाटो ने कहा, "स्टैडफास्ट डिफेंडर 2024 यूरोप की रक्षा को मजबूत करने के लिए उत्तरी अमेरिका और गठबंधन के अन्य हिस्सों से तेजी से सेना तैनात करने की नाटो की क्षमता का प्रदर्शन करेगा।"

सिंगापुर: भ्रष्टाचार के मामले में फंसे परिवहन मंत्री ईश्वरन का पद, पार्टी व पार्लियामेंट से इस्तीफा

सिंगापुर। भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप का सामना कर रहे भारतीय मूल के सिंगापुर के परिवहन मंत्री एस ईश्वरन ने मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया है। द स्ट्रेट्स टाइम्स के मुताबिक 61 वर्षीय ईश्वरन ने सत्ताधारी पीपुल्स एक्शन पार्टी (पीएपी) और पार्लियामेंट की सदस्यता से भी इस्तीफा दे दिया है। भ्रष्टाचार के आरोपों में घिरे ईश्वरन को पिछले साल 11 जुलाई को गिरफ्तार किया गया था। जिसके बाद प्रधानमंत्री लूंग के आदेश पर ईश्वरन के वेतन में 82 फीसदी की कटौती की गई थी। इन दिनों ईश्वरन जमानत पर हैं। हालांकि परिवहन मंत्री रहते ईश्वरन की कोविड महामारी के बाद सिंगापुर को एयर हब के रूप में पुनर्निमाण को लेकर काफी प्रशंसा भी हुई थी।

पाकिस्तान का पलटवार, ईरान की सीमा में एयर स्ट्राइक का दावा

इस्लामाबाद। ईरान की तरफ से पाकिस्तान में किए गए ड्रोन व मिसाइल हमले और दोनों देशों के बीच जारी राजनयिक तनातनी के बीच पाकिस्तान ने गुरुवार को दावा किया है कि वायुसेना ने ईरान की सीमा में घुस कर आतंकी ठिकानों को ध्वस्त किया। ये ठिकाने पाकिस्तान में वांछित बलोच विद्रोहियों के थे।

पाकिस्तान विदेश मंत्रालय के मुताबिक पाकिस्तान ने ईरान के सिएस्तान-ओ-बलूचिस्तान प्रांत में छिपे आतंकियों के ठिकानों पर सटीक लक्षित हमलों की श्रृंखला शुरू की। इस कार्रवाई में कई आतंकी मारे गए। खुफिया सूचना के आधार पर यह कार्रवाई की गई। पाकिस्तान का यह कदम ईरानी की तरफ से 16 जनवरी को पाकिस्तान के बलूचिस्तान में किए गए एयर स्ट्राइक के बाद आया है जिसमें ईरान की वायुसेना ने पाकिस्तान की सीमा में बने आतंकी संगठन जैश-अल-अदल के दो ठिकानों पर हमला किया था।

पाकिस्तान ने इसे अस्वीकार्य बताते हुए कड़ी नाराजगी जताई थी। पाकिस्तान के विदेश मंत्री जलील अब्बास जिलानी ने चेतावनी दी कि एकतरफा कार्रवाई से क्षेत्रीय शांति खतरे में पड़ सकती है। इस उकसावे वाली कार्रवाई के बाद पाकिस्तान को जवाबी कार्रवाई का अधिकार मिल गया है।

पूरे मामले को लेकर दोनों देशों के संबंधों में तनाव आ गया है। पाकिस्तान ने ईरान के राजदूत को निष्कासित कर दिया। साथ ही ईरान से अपने राजदूत को वापस बुला लिया है।

भारत ने ईरान का समर्थन करते हुए बुधवार को कहा था कि यह ईरान-पाकिस्तान के बीच का मामला है। भारत आतंकवाद के खिलाफ शून्य सहनशीलता की नीति पर चल रहा है। हम आत्मरक्षा में दूसरे देशों की ओर से उठाए जाने वाले ऐसे कदमों को समक्ष सकते हैं।

डोनाल्ड ट्रम्प ने आयोवा कॉकस में जीत का जश्न मनाया, कहा–अमेरिका की सेवा के लिए बना हूं

डेस मोइनेस (आयोवा)। अमेरिकी प्रांत आयोवा में मिली जीत से पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प गदगद हैं। उन्होंने जीत का जश्न मनाते हुए कहा कि वह अमेरिका की सेवा के लिए बने हैं। ट्रम्प ने 2024 के चुनाव के पहले रिपब्लिकन प्राइमरी आयोवा कॉकस में शानदार जीत हासिल की। उन्हें 51 प्रतिशत वोट मिले हैं। यह जीत उनकी रिपब्लिकन पार्टी पर स्थायी पकड़ का स्पष्ट संकेत है।

द न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, ट्रम्प की जीत के 30 अंकों के अंतर ने आयोवा रिपब्लिकन कॉकस में प्रतिस्पर्धा का एक रिकॉर्ड बनाया है। रिपोर्ट के अनुसार, बावजूद इसके ट्रम्प को पूरे साल अदालती तारीखों का सामना करना होगा। उनके खिलाफ 91 मामले दर्ज हैं। वह कल मानहानि मुकदमे के सिलसिले में न्यूयॉर्क कोर्ट हाउस में उपस्थित हुए। यह मुकदमा लेखिका ई. जीन कैरोल से संबंधित है। कैरोल ने पूर्व राष्ट्रपति पर बलात्कार का आरोप लगाया है। इसके बाद ट्रम्प एक रैली के लिए न्यू हैम्पशायर चले गए।

इस बीच डोनाल्ड ट्रम्प ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो जारी कर दावा किया कि ईश्वर ने उन्हें अमेरिका का ध्यान रखने के लिए ही बनाया है। तीन मिनट के वीडियो में उन्होंने कहा है कि 14 जून, 1964 को भगवान ने सोचा कि अमेरिका को एक केयर टेकर की जरूरत होगी, इसी वजह उन्हें पैदा किया गया । अमेरिका को एक मजबूत और साहसी इंसान की जरूरत है, जो भेड़ियों से न डरे। आयोवा में जीत के बाद ट्रंप ने मतभेदों को भुलाकर अमेरिका को बाइडेन के कब्जे से आजाद कराने की अपील की है। उन्होंने इसके लिए सभी रिपब्लिकन उम्मीदवारों से समर्थन करने की अपील की है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

नेपाल: अतिक्रमित राम मंदिर का उद्धार कर 22 जनवरी को हो रही राम सीता की मूर्ति स्थापना

काठमांडू। भारत के अयोध्या में 22 जनवरी को भगवान श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा के दिन को स्मरणीय बनाने के लिए सभी किसी ना किसी रूप से कुछ नया करने का प्रयास कर रहे हैं। इसी क्रम में नेपाल के बीरगंज में बहुत ही पुराने और अतिक्रमित भगवान राम के मंदिर का जीर्णोद्धार कर उसमें मूर्ति स्थापना की जा रही है।

बीरगंज शहर के बीचों बीच रहे श्रीराम मन्दिर पर पिछले कई दशकों से गैर कानूनी अतिक्रमण किया गया था। वहां के स्थानीय सांसद प्रदीप यादव के प्रयास से पहले तो इस पुराने मंदिर से गैर कानूनी कब्जा हटाया गया और अब मंदिर का जीर्णोद्धार कर वहां भगवान राम और माता सीता की मूर्ति स्थापित की जा रही है।

बीरगंज के युवा सांसद प्रदीप यादव ने बताया कि अयोध्या में होने जा रहे भगवान श्रीराम के प्राण प्रतिष्ठा समारोह के दिन (22 जनवरी) ही बीरगंज के इस राम मन्दिर में रामसीता की मूर्ति की स्थापना की जाएगी। उन्होंने कहा कि इस ऐतिहासिक दिन पर बीरगंज नगरवासी की तरफ से भगवान श्रीराम के प्रति यह एक छोटा सा भक्ति समर्पण होगा।

मंदिर का जीर्णोद्धार बीरगंज महानगरपालिका के तरफ से किया गया है। मेयर राजेशमान सिंह की रेखदेख में ही मंदिर की सजावट और मूर्ति स्थापना की तैयारी की जा रही है। मेयर सिंह ने बताया कि श्रीराम मंदिर में मूर्ति स्थापना स्थानीय सांसद प्रदीप यादव के हाथों की जाएगी। उन्होंने बताया कि शाम को पूरे नगर में भव्य दीपावली मनाया जाएगी। सार्वजनिक स्थानों और सरकारी दफ्तरों में महानगरपालिका की तरफ से दीपावली मनाए जाने की जानकारी भी मेयर ने दी है।